शब्दांमृत® (हिंदी)

विलास जैन

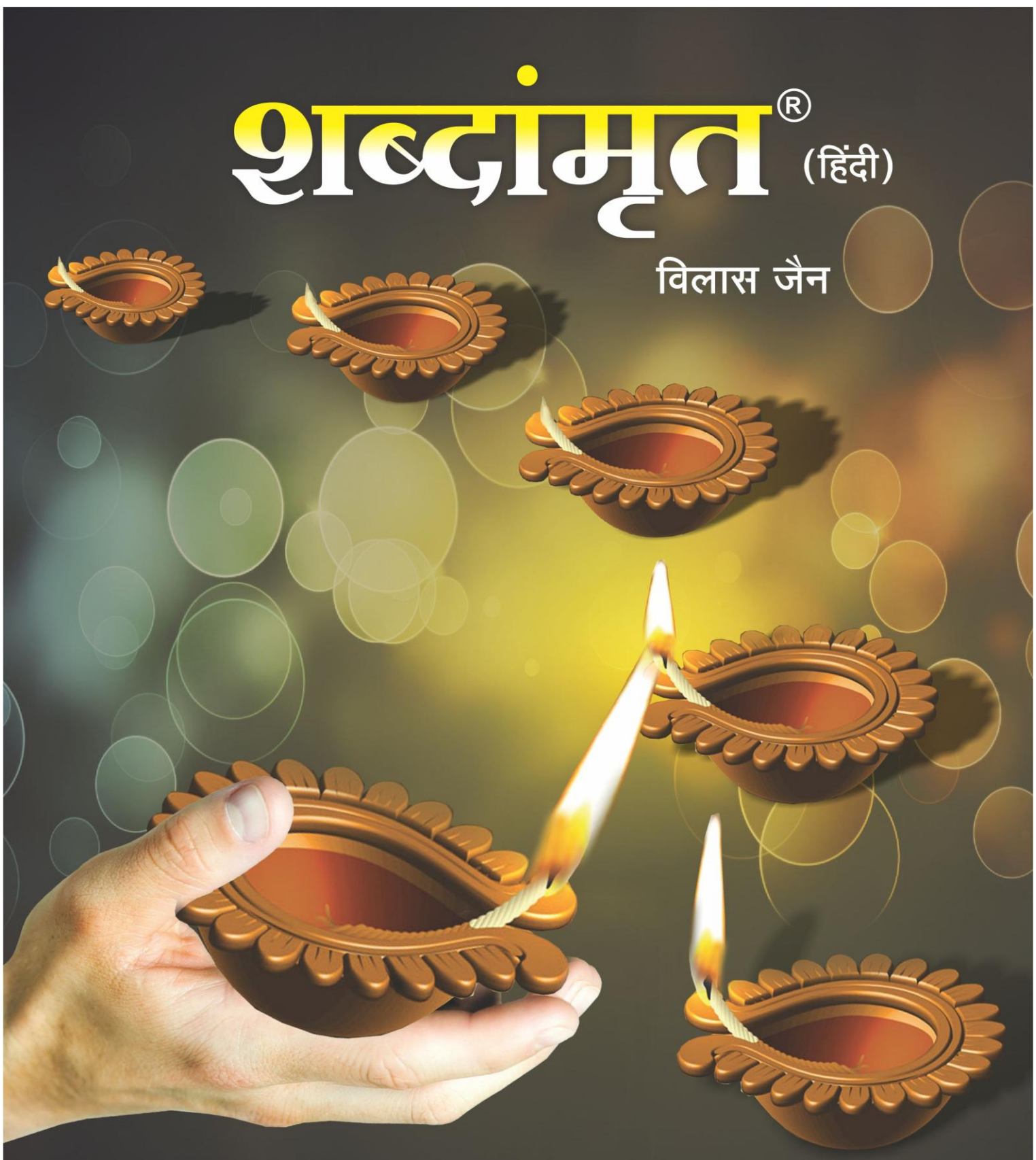

यह कार्य नही क्रांती है।

NEW ERA'S SELF HELP®

समर्पण

यह किताब समर्पित है,
समाज के उन महान व्यक्तीयोंको
जिन्होने जीवन में
भौतिक मूल्यो से ज्यादा मानव मूल्यो को
महत्व दिया।
साधन और संपत्तीसे ज्यादा जिन्होने
सुख, समाधान और भावनाओको
महत्व दिया।।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।
विलास जैन

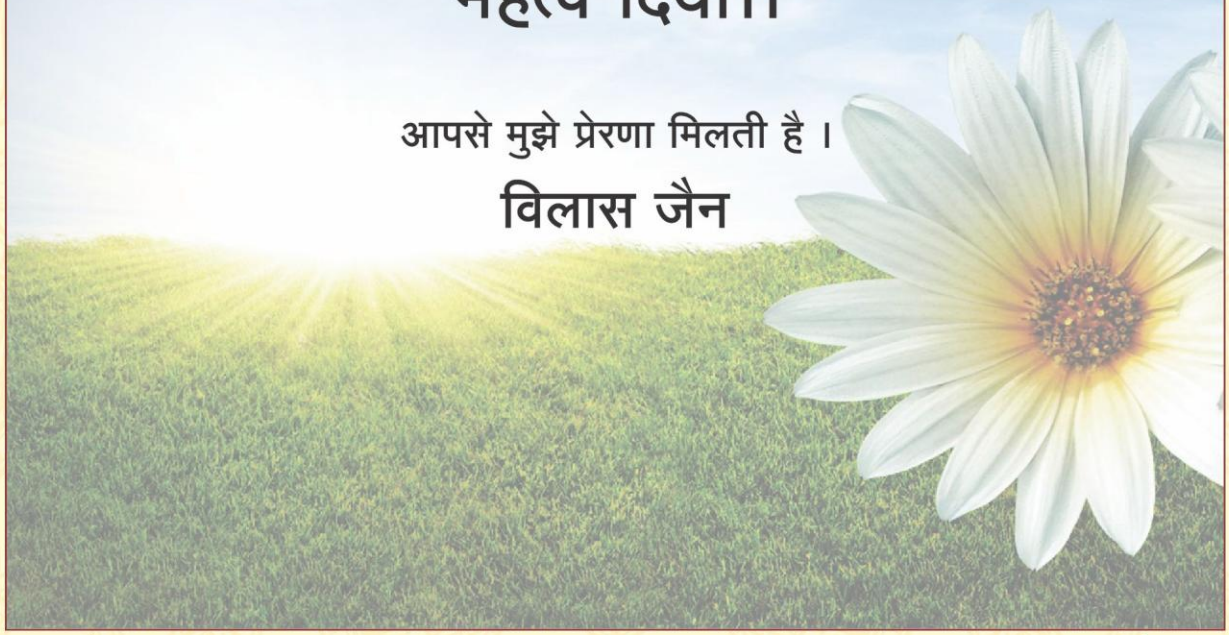

अल्प परिचय – विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का भी मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पुरा किया। उसके बाद उन्होने अपना चिपकाने वाले पदार्थोका व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे कुछ वर्ष बेचनेका व्यवसाय किया फिर बादमे वही चिजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने चिपकाने वाले पदार्थो मे दो नये संशोधन किये। और अनेक उत्पादन खुद बनाये। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनके लेख हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपुर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, कव्वाली, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, सिनेगीत, उखाने, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक साहित्य का एक बड़ा संग्रह तैयार किया हुआ है। उनकी अबतक नऊ किताबे प्रकाशित हो चुकी है और यह दसवी किताब है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोंका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल उनको अपने साहीत्य यात्रा मे बहोत ही महत्वपुर्ण साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और लिखान से मिलनेवाली संपूर्ण राशी पर्यावरण सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

शब्दांमृत® (हिंदी)

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
अक्षरांकन	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
निर्मिती	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव.

New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Right Reserved 2015
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company
Act 1956 Reg. No. U51909 MH2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित :

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ कानूनी कारवाई की जायेगी।

प्रस्तावना

जिंदगी मे संघर्ष करते वक्त अनेक कविताये, कुछ शब्द समुह, सुविचार, शेरो शायरी या दोहे हमारी लढ़ने की शक्ति दुगनी कर देते है। हारती हुई बाजी जितने मे हमारी हौसला अफजाही कर ऐसे साहित्य हमारे मददगार साबित होते है। अनेक मोड़ोपर यह हमे सही रास्ता दिखाते है। गुमराह होनेसे रोकते है, और हमे सही जीवन जीने की प्रेरणा देते है। मेरे भी जिंदगीमे ऐसे अनेक साहित्य मार्गदर्शक, मिल का पत्थर साबित हुये है। उसी से प्रेरणा लेकर मैने सोचा मै भी कुछ ऐसे शब्दसमुह तैय्यार करु जो समाजमे मल्हम, टॉनिक या मार्गदर्शक का काम करेगें। आजके इस सांस्कृतिक प्रदुषन के जमानेमे इन सब चीजो का महत्व पहलेसे ज्यादा बढ़ गया है। क्योकी अब तुम्हे तुम्हारे पथ से गुमराह करने के लिये टि.व्ही. तुम्हारे घरमेही बैठा है। व्हॉटस् अप और फेसबुक द्वारा अब आसानीसे बिना किसीको मालुम किये अनेक असामाजिक बाते की जा सकती है। पहले हर किसीकी जिंदगी संस्कार, नितीमुल्य, आदर, शर्म और त्याग के धागोसे बंधी रहती थी। पर अब इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़िया के आगमन ने इन सभी धागोको तोड़ दिया है। अब हमे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है, कैसे दिखना है, कैसे बर्ताव करना, क्या खरीदना है, यह इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़ीया सिखाता है। इतना ही नही हमारे रिश्ते कैसे हो वो भी कई धारावाईको द्वारा हमारे अवचेतन मन मे बिठाने का काम हो रहा है। मुझे आशा है के इस किताबमे से कुछ कविताये, आपको गुमराह होनेसे रोक सकती है। अगर आप टूट चुके हो, हार चुके हो तो इसमेसे कुछ कविताये आपके लिये संजीवनिका काम कर सकती है। आपको इस किताबसे कुछ लाभ हुआ तो मेरा लिखना सार्थक होगा।

आपका अपना

विलास जैन

शब्दांमृत® (हिंदी)

सूची

१.	अब मै जीऊंगा	२१.	मै गुमशुदा
२.	हम है तो	२२.	कल ऐसा आये
३.	लहरे	२३.	मंझिल के पास
४.	सबेरा	२४.	जिंदगी का राज
५.	परिक्षा	२५.	जिंदगी साथ निभाओ
६.	ये मन तू	२६.	आ अब लौट चले
७.	याद आऊंगा वसुंधरा	२७.	आओ ढूंढ़े
८.	तुम्हारे विचार	२८.	अनमोल
९.	दिल संभल	२९.	सपने
१०.	दिल तू ना ड़र	३०.	बारिश
११.	एक दिवाली ऐसी आये	३१.	छोड़ न देना
१२.	आभार प्रार्थना	३२.	भावनाओ का कारोबार
१३.	चलो करे विसर्जन	३३.	खता
१४.	अपनी औकात	३४.	कैसे बचेगी जान
१५.	ऐसा कीजिये	३५.	चाहिये
१६.	दृष्टिपथ मे आ गई	३६.	दोनो बहके
१७.	सुख-दु:ख	३७.	अवहेलना
१८.	आत्मबल इकठ्ठा करलो	३८.	आलोचना
१९.	चलते रहो	३९.	आशा निराशा
२०.	पैसे बनाने का मशीन	४०.	मतदान

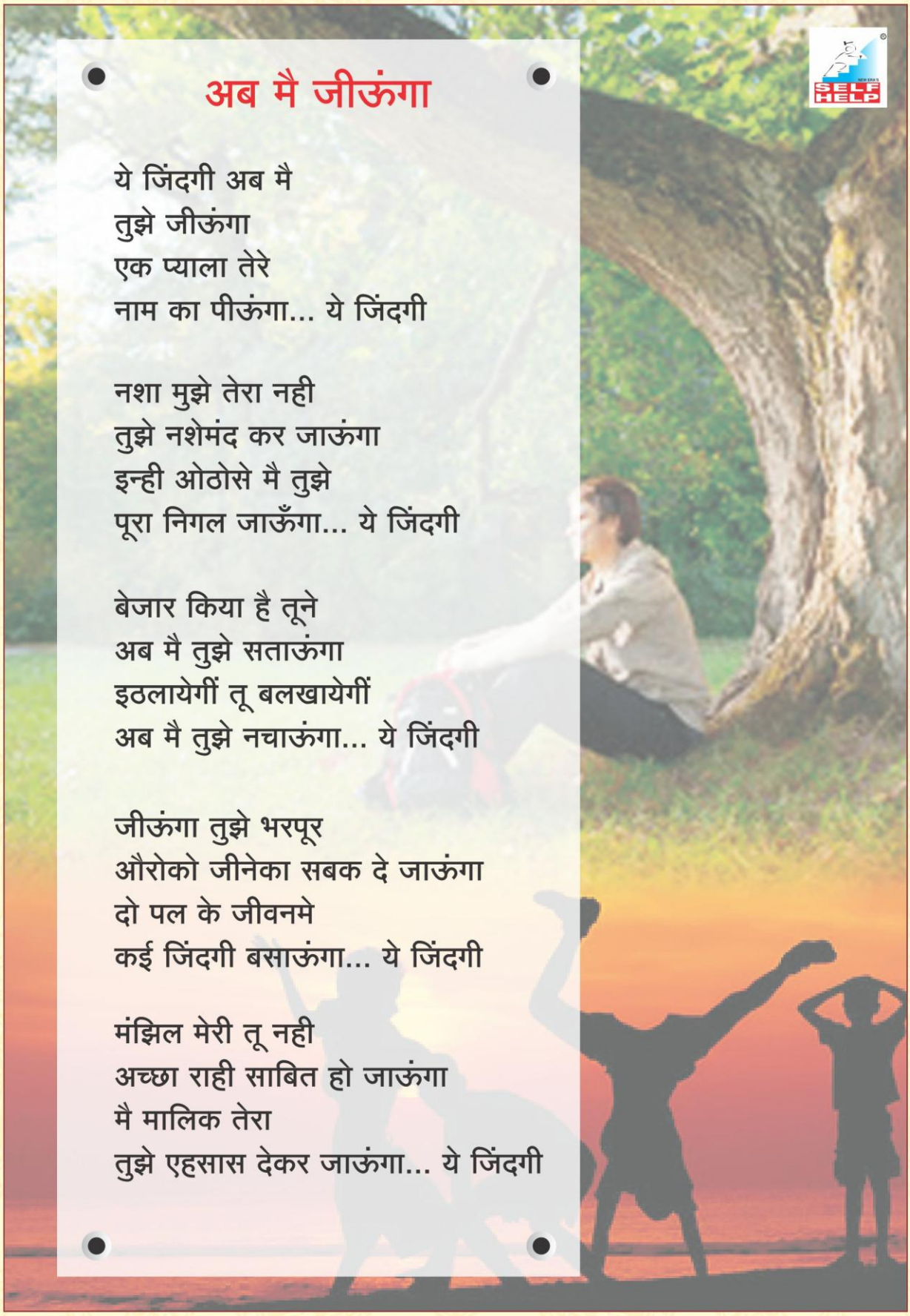

अब मै जीऊंगा

ये जिंदगी अब मै
तुझे जीऊंगा
एक प्याला तेरे
नाम का पीऊंगा... ये जिंदगी

नशा मुझे तेरा नही
तुझे नशेमंद कर जाऊंगा
इन्ही ओठोसे मै तुझे
पूरा निगल जाऊँगा... ये जिंदगी

बेजार किया है तूने
अब मै तुझे सताऊंगा
इठलायेगीं तू बलखायेगीं
अब मै तुझे नचाऊंगा... ये जिंदगी

जीऊंगा तुझे भरपूर
औरोको जीनेका सबक दे जाऊंगा
दो पल के जीवनमे
कई जिंदगी बसाऊंगा... ये जिंदगी

मंझिल मेरी तू नही
अच्छा राही साबित हो जाऊंगा
मै मालिक तेरा
तुझे एहसास देकर जाऊंगा... ये जिंदगी

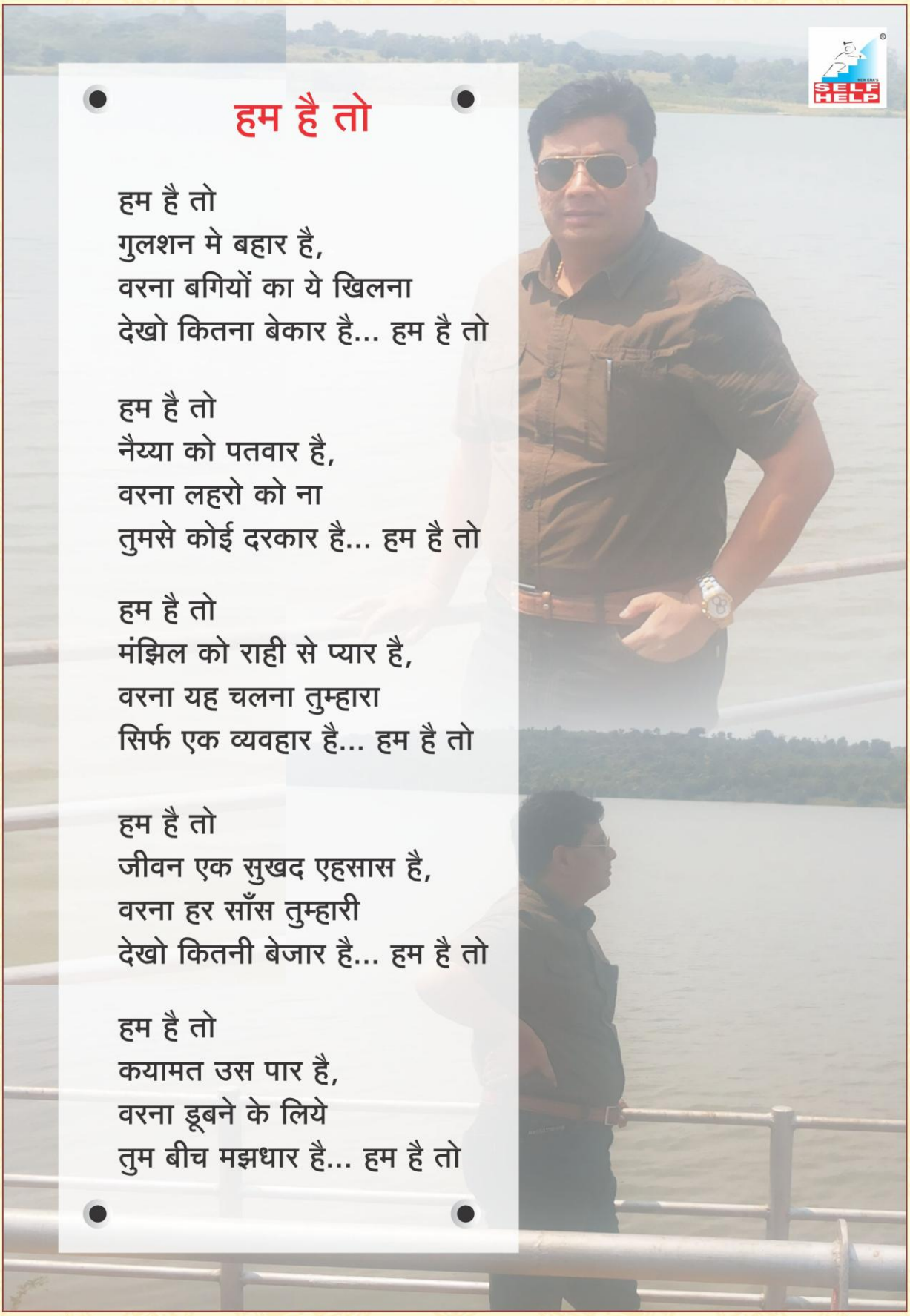

हम है तो

हम है तो
गुलशन मे बहार है,
वरना बगियों का ये खिलना
देखो कितना बेकार है... हम है तो

हम है तो
नैय्या को पतवार है,
वरना लहरो को ना
तुमसे कोई दरकार है... हम है तो

हम है तो
मंझिल को राही से प्यार है,
वरना यह चलना तुम्हारा
सिर्फ एक व्यवहार है... हम है तो

हम है तो
जीवन एक सुखद एहसास है,
वरना हर साँस तुम्हारी
देखो कितनी बेजार है... हम है तो

हम है तो
कयामत उस पार है,
वरना डूबने के लिये
तुम बीच मझधार है... हम है तो

लहरे

कभी लहरे रौंधती थी हमे
आज हम लहरो पर सवार।
अब पास आ रहे किनारे
फट ना पड़ेगी अब ये पतवार।।

कितनी बार डुबोया उसने
ना जाने दिया उस पार।
छटपटा रहे थे हम
ऊपर आनेको थे कितने बेकरार।।

इनके कारण ही लगा था
हमे कितना बुरा ये संसार।
आज खुश हम बहुत
करके इनको पार, सौ बार।।

कितना गया था वक्त
और ताकत इनके कारण बेकार।
शुक्र है बनी रही
ताकत और हिम्मत वफादार।।

सबेरा

कालिमा छटने लगी
हो रहा उजाला।
आशाओकी सुवर्ण छटा
लिये सूरज है निकला।।

पुण्य काल का आगमन
देखो यह निराला।
जागो अब तुम भी
पंछी निकले ढूंढ़ने निवाला।।

उत्साह भरा सृष्टिमे
उमंग से भरी त्रिशला।
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरोने
द्वार तुम्हारे लिये खोला।।

ओस से नहाये वृक्ष
समय बीता वो काला।
गोरज उड़ाता जा रहा
देखो वो मतवाला ग्वाला।।

नवचैतन्य लिये देखो
सृष्टिने है द्वार खोला।
उठो अब स्वागत करो
खड़ा द्वारपे रवि किरणोवाला।।

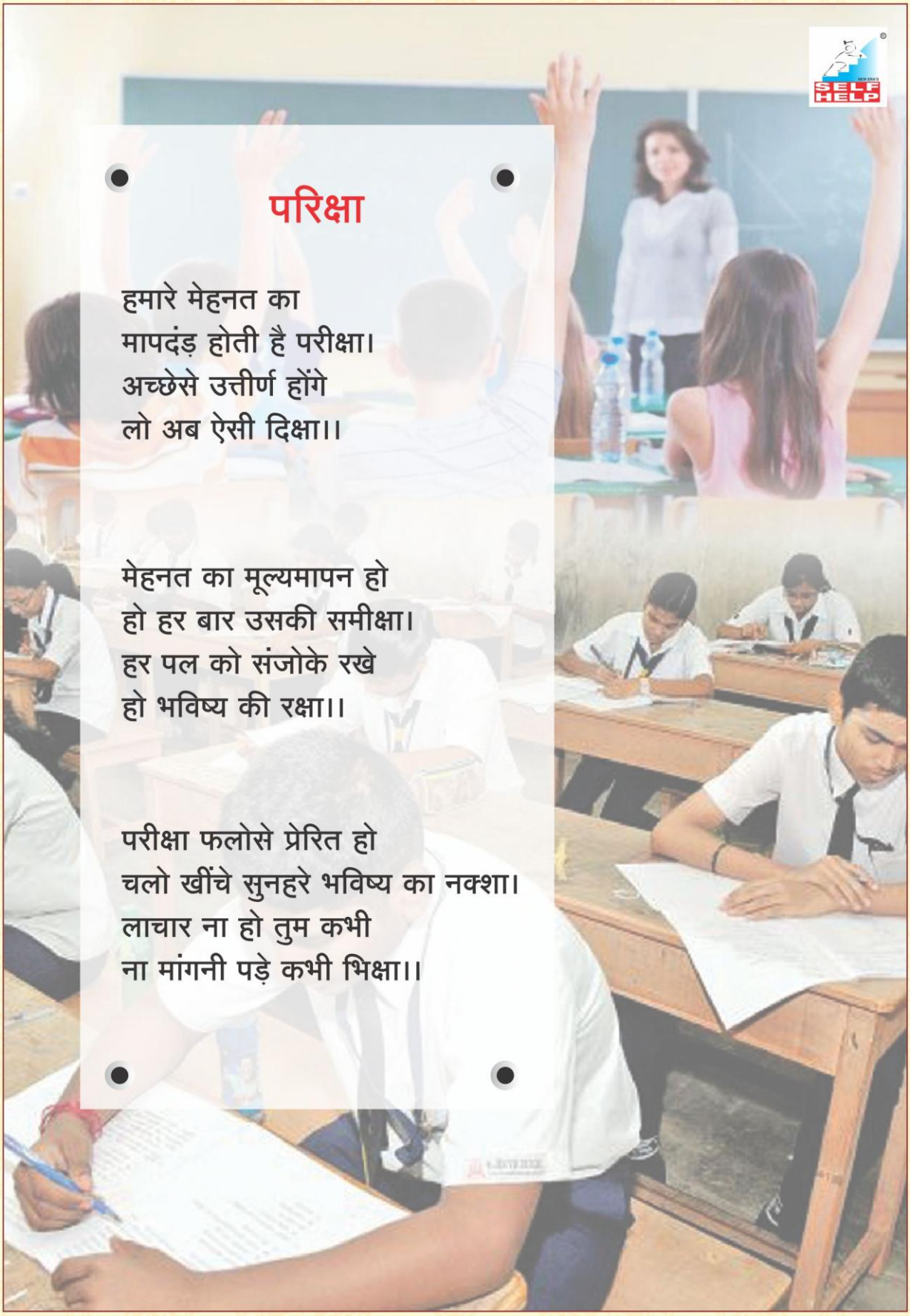

परिक्षा

हमारे मेहनत का
मापदंड़ होती है परीक्षा।
अच्छेसे उत्तीर्ण होंगे
लो अब ऐसी दिक्षा।।

मेहनत का मूल्यमापन हो
हो हर बार उसकी समीक्षा।
हर पल को संजोके रखे
हो भविष्य की रक्षा।।

परीक्षा फलोसे प्रेरित हो
चलो खींचे सुनहरे भविष्य का नक्शा।
लाचार ना हो तुम कभी
ना मांगनी पड़े कभी भिक्षा।।

ये मन तू

ये मन तू कितना सताता है
कई बार काबू मे आकर
फिर मचल जाता है .... ये मन तू

कभी युहीं किससे
तू उकता जाता है
तो कभी अनचाहे
विषयोमे मंड़राता है .... ये मन तू

कभी परायोंको
पाना चाहता है
तो कभी अपनोसे
आँख चुराता है .... ये मन तू

कभी अनहोनी चीजो के
पीछे भागता रहता है
तो कभी ख्वाँबोकी
दुनियाँ बनाता है .... ये मन तू

कुछ पाते ही तू
नई खोज शुरु करता है
सबका होकर भी तू
ना किसीका होता है .... ये मन तू

याद आऊंगा वसुंधरा

याद आऊंगा मै तुम्हे
देखना तुम वसुंधरा।
मै सजाता हूँ तुम्हे
आशिक मै तुम्हारा खरा।।

हरियाली फैलाकर
हरी चुनरी तुम्हे पहनाई।
लाल फलोंसे मैने
माँग तुम्हारी सजाई।।

तुम हो अमर
मै ठहरा नश्वर।
जितना वक्त बाकी
करुंगा तुमपर न्योछावर।।

जब भी आयेगा
इस जहाँसे जाने का अवसर।
राख बनकर सो जाऊंगा
गोदी मे तुम्हारे छिपकर।।

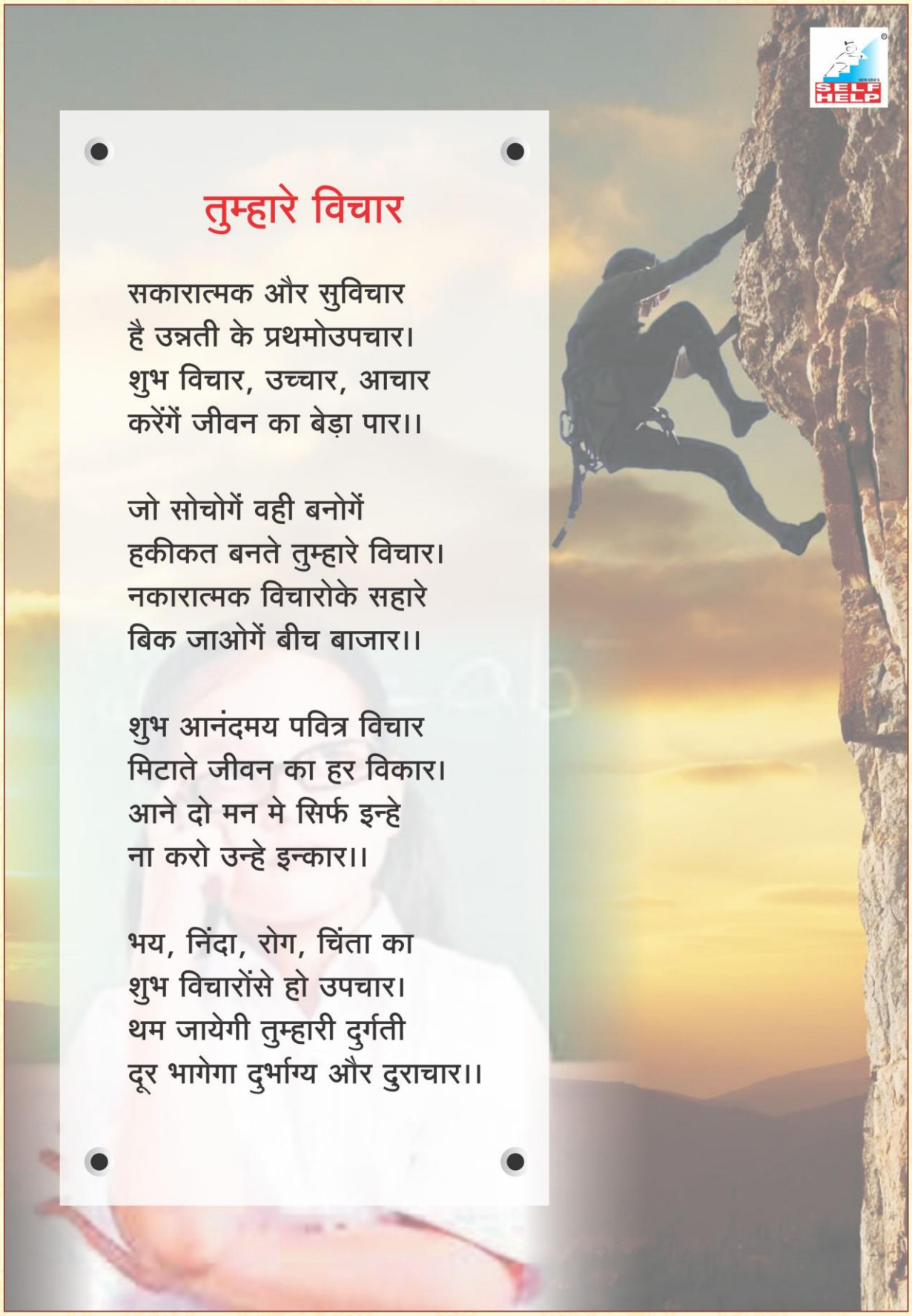

तुम्हारे विचार

सकारात्मक और सुविचार
है उन्नती के प्रथमोउपचार।
शुभ विचार, उच्चार, आचार
करेंगें जीवन का बेड़ा पार।।

जो सोचोगें वही बनोगें
हकीकत बनते तुम्हारे विचार।
नकारात्मक विचारोके सहारे
बिक जाओगें बीच बाजार।।

शुभ आनंदमय पवित्र विचार
मिटाते जीवन का हर विकार।
आने दो मन मे सिर्फ इन्हे
ना करो उन्हे इन्कार।।

भय, निंदा, रोग, चिंता का
शुभ विचारोंसे हो उपचार।
थम जायेगी तुम्हारी दुर्गती
दूर भागेगा दुर्भाग्य और दुराचार।।

दिल संभल

ये दिल तू क्यो ड़रता है
तुझे ड़र लगे।
काम ऐसा तू
क्या करता है।।

ये जो संकट आते है
जो तुझे सताते है।
ये जो मुश्किले आती है
जो तुझे रूलाती है।।

जिम्मेदारीयाँ आयेगी
जो तुझे दबायेगी।
गम की बदरा छायेगी
तर बतर कर जायेगी।।

ये जो तूने पाया है
तेरा नही पराया है।
कर्म किये जो तूने
उसकी ये छाया है।।

दिल तू ना ड़र
उन मुश्किल बातो से।
नींद ना आने वाली
उन अंधेरी रातो से।।

वक्त सबकुछ
बहाकर ले जायेगा।
ना भाने वाला तेरा
हर पल कट जायेगा।।

दिल तू ना ड़र

ये दिल तू ना ड़र
चाहे अनजान लगे ड़गर
मंझिल ना आये नजर
चाहे तन्हा कटे सफर... ये दिल

कभी जिंदगी जाती ठहर
कभी थंबते नही प्रहर
कभी धोका देती नजर
तो कभी पीना पड़ता जहर... ये दिल

दिल तुझे उठना होगा
उसपर एतबार करना होगा
हर वार सहना होगा
चाहे कितना गहरा होगा... ये दिल

हावी हो जिम्मेदारी पर
टूट पड़ परेशानीयो पर
कुछ ना मिलेगा रोकर
खुद पर यकीन कर... ये दिल

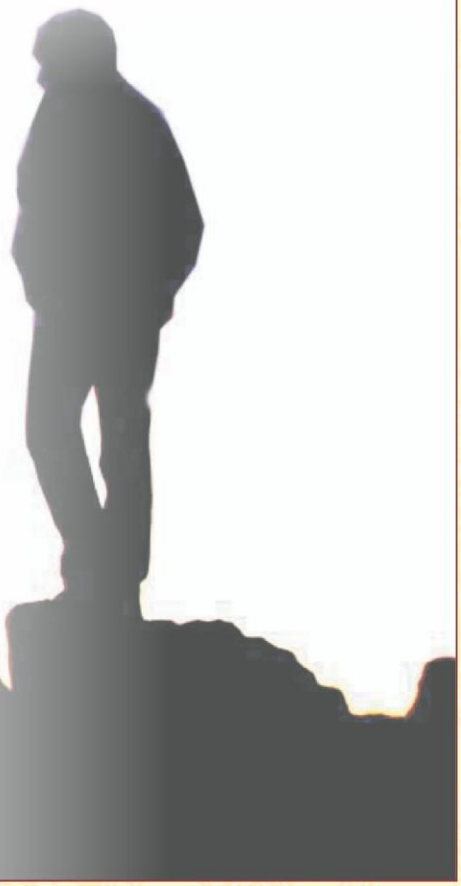

एक दिवाली ऐसी आये

एक दिवाली ऐसी आये
अहंम, स्वार्थ, लालच खत्म हो जाये
वासना कामना के जगहोपर
साधना समाधान जगमगाये... एक दिवाली

साधन सुविधाओ के बेड़ियोसे
हम आझाद हो जाये
मानवता और अध्यात्म के
बातोपर हम समय बिताये... एक दिवाली

हम सभी मे भाईचारा बढ़े
सारे भेद भाव मिट जाये
दीवारे, सरहदे, धर्म के आधारपर
ना फिर किसे बाटा जाये... एक दिवाली

दीपक सा जले हर कोई
औरोके घर मे उजाला फैलाये
देश प्रेम के यज्ञ मे
हम सब आहुती बन जाये... एक दिवाली

आभार प्रार्थना

हृदयमे आभार लिये
कर रहा हूँ
भगवन तुम्हे नमन
तुम मुझमे और सृष्टिमे
कर रहा हूँ
मै तुम्हे नमन

समस्या तुमने दी
तुमही इसे सुलझाओगे
परिक्षा लेकर मेरी
आनंद पथ दिखलाओंगे

भय, चिंता और रोग
है मनकी बीमारी
मन को नियंत्रित कर
बनायेंगे दुनियाँ प्यारी

करते मदत तुम
ध्येय बनाकर उसे पाने
मंझिल लगती आसान
रास्ते कटते अनजाने

अहंकार और कर्ता भावका
कर रहा तुम्हे सर्मपण
मेरा सबकुछ तेरा
कर कर रहा हूँ
तेरा तुझपर अर्पण

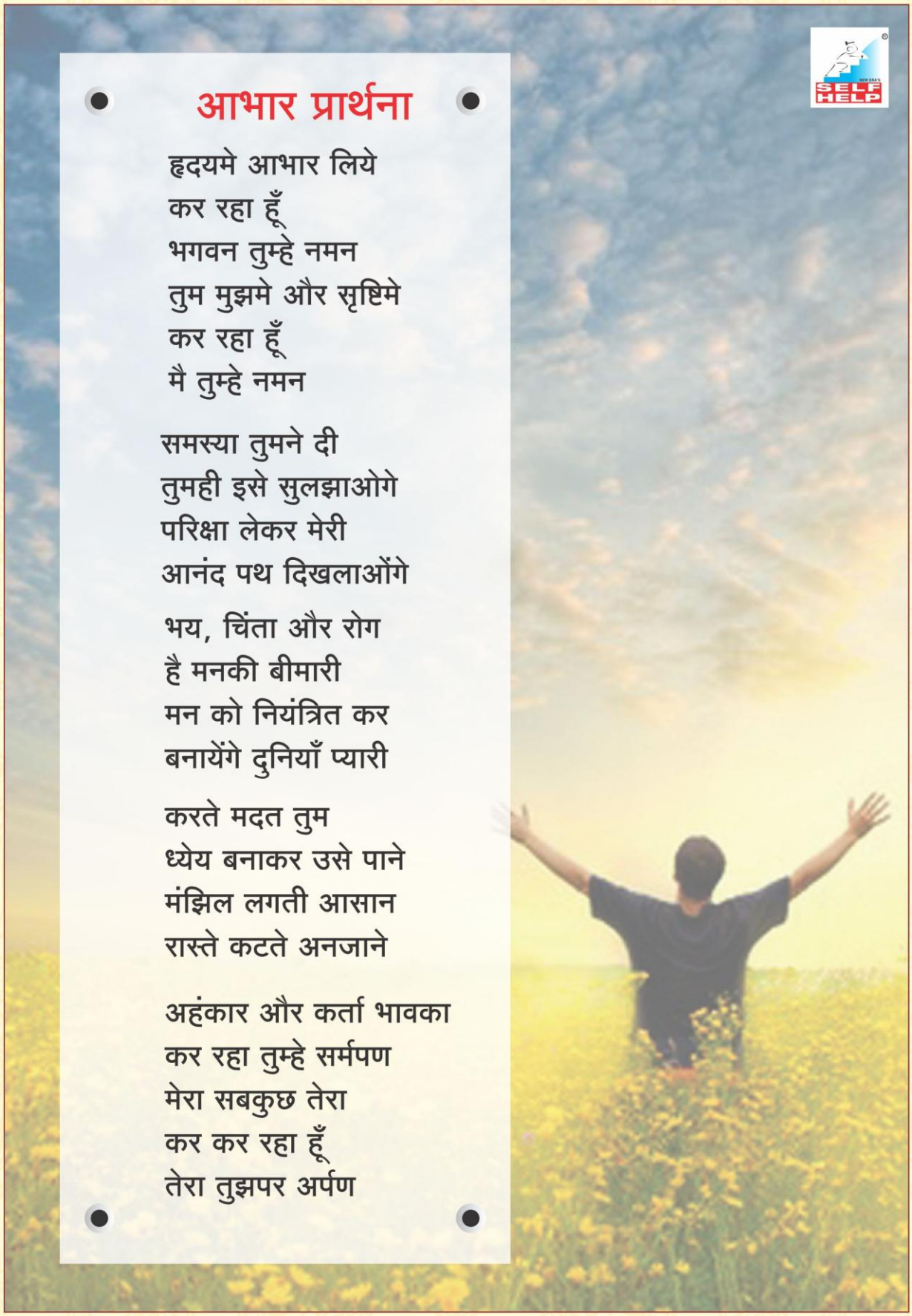

चलो करे विसर्जन

असंभव आशाओका चलो
करे विसर्जन
बोझ हलका करे
चलो चमकाये मन

हर आशा पूरी करने
नही इन्सान सक्षम
जो उसे मंजूर
वही करे हम

जाने क्या संभव, क्या नही
बचाये अपना जीवन
सिर्फ मस्ती मे गुजरे
जीवन का हर क्षण

असंभव को संभव बनाने मे
जीवन बनता एक रण
कुछ चीजें मिले बिना भी
कटता आनंदसे जीवन

अपनी औकात

आओ करे सौ
बातों की एक बात
भूलना नही चाहीये
हमको अपनी औकात

पद, पैसा, पुरुषार्थ की
होती है औकात
आपेसे बाहर जाते ही
होती संकटोकी शुरुवात

अपने आपे में रहकरही
रखो अपनी अपनी बात
हर दिन के बाद
आती है भयानक रात

जो भूलता नही
है अपनी औकात
पाता है ढ़ेर सारे
सुखोकी सौगात

औकात में रहकरही
जीना सीखो मेरे भाई
इसको लांघतेही शुरु
होती है बड़ी खाई

ऐसा कीजिए

मौत ऐसी आये
जो औरोको
आदर्श जिंदगी जीने की
दिशा देकर जाये

जीवन ऐसा जिये
जो औरोको
मरने के लिये उद्देश
देकर जाये

प्रीत ऐसे कीजिये
जो औरोको
सर्वोत्तम त्याग
की भावना देकर जाये

शिक्षा ऐसे लीजिये
जो औरोको
शिक्षित कर जीने का
सामान देकर जाये

भक्ती ऐसे कीजिये
जो औरोको
अपनत्वको खोने की
शक्ती देकर जाये

शक्ती ऐसी पाईये
जो औरोको
रक्षा और क्षमा करने की
बुद्धी देकर जाये

दृष्टिपथ मे आ गई

मंझिल दृष्टिपथ
मे आ गई
कोयल सुना रही
कोई धुन नई

भूलो बिसरो
वो यातनाये
आओ आशाओका
नया दीप जलाये

पाव थके हूये
तो क्या हुआ
हम बसायेंगे
ये जहाँ नया

पतझड़ का कोई
हमे गम नही
आओ बनाये अब
योजनाये नई

नये जीवन के
चलो बने हमराही
ठंड़ी हवा देखो
नवचैतन्य है लाई

दूर करो आशाओको
जो है मुरझाई
नये धुन पे जीवन
होगा अब सुखदाई

मन के मैल
को दो विदाई
बीते बातो का
रंज ना दे दिखाई

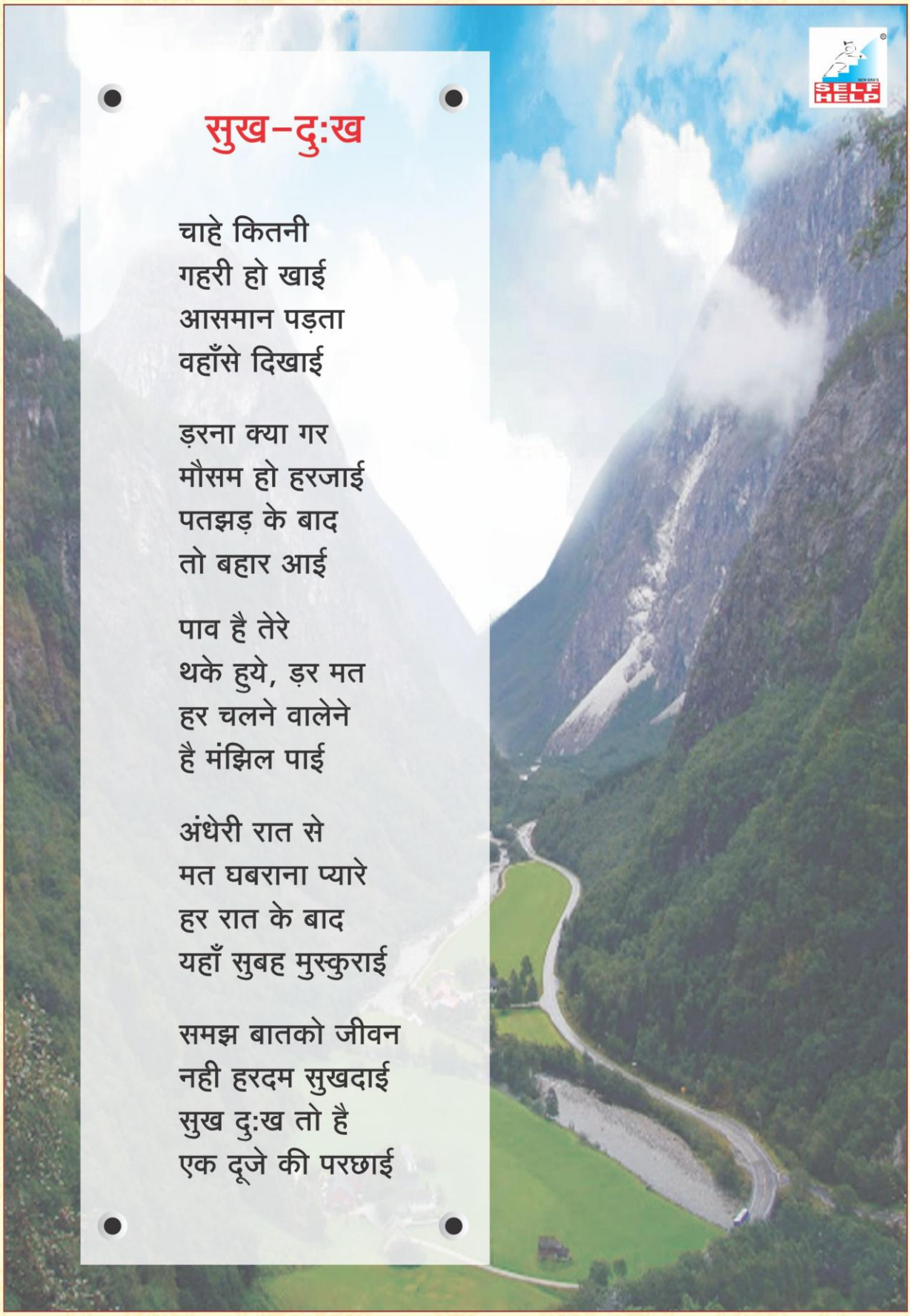

सुख–दु:ख

चाहे कितनी
गहरी हो खाई
आसमान पड़ता
वहाँसे दिखाई

ड़रना क्या गर
मौसम हो हरजाई
पतझड़ के बाद
तो बहार आई

पाव है तेरे
थके हुये, ड़र मत
हर चलने वालेने
है मंझिल पाई

अंधेरी रात से
मत घबराना प्यारे
हर रात के बाद
यहाँ सुबह मुस्कुराई

समझ बातको जीवन
नही हरदम सुखदाई
सुख दु:ख तो है
एक दूजे की परछाई

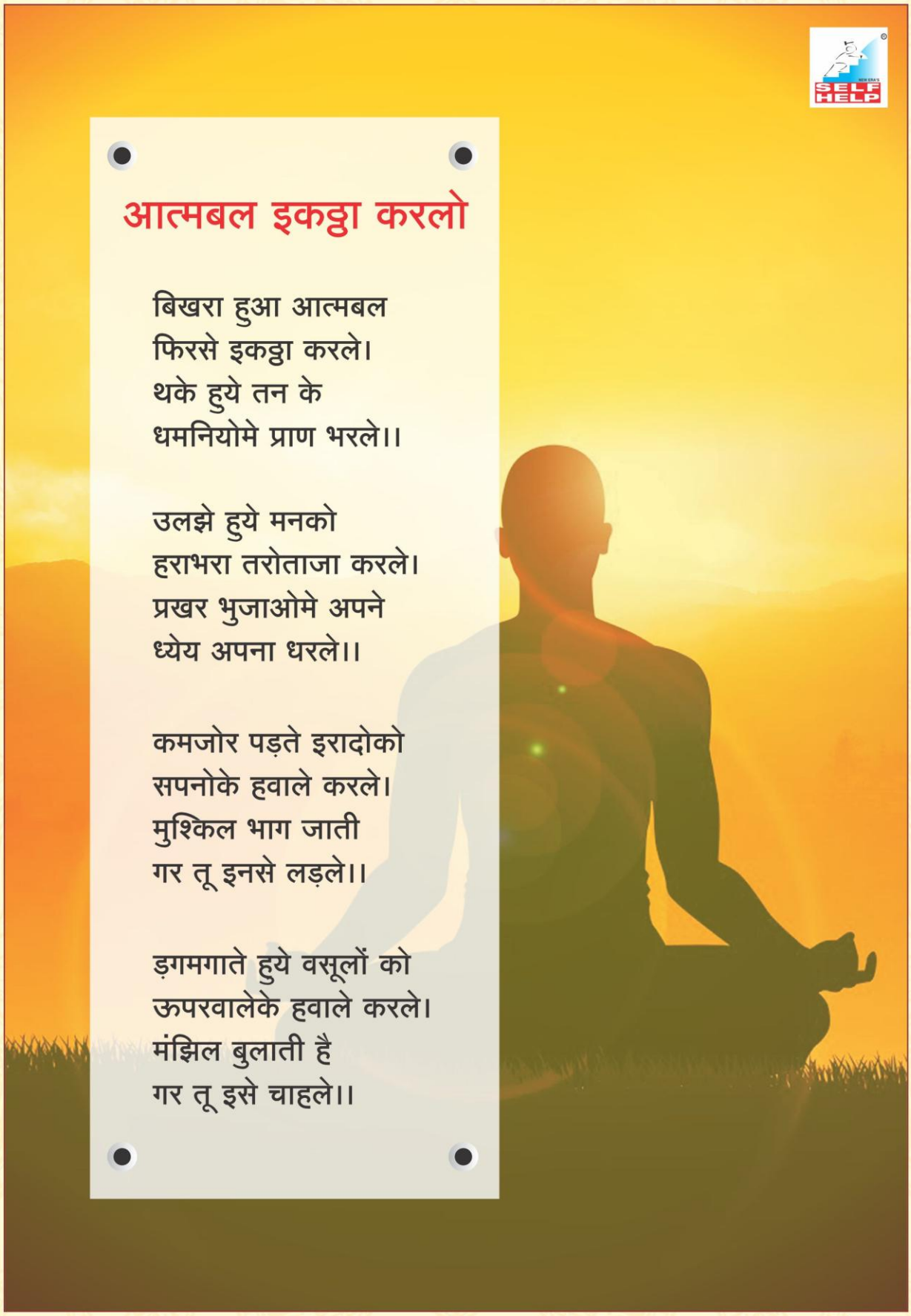

आत्मबल इकट्ठा करलो

बिखरा हुआ आत्मबल
फिरसे इकट्ठा करले।
थके हुये तन के
धमनियोमे प्राण भरले।।

उलझे हुये मनको
हराभरा तरोताजा करले।
प्रखर भुजाओमे अपने
ध्येय अपना धरले।।

कमजोर पड़ते इरादोको
सपनोके हवाले करले।
मुश्किल भाग जाती
गर तू इनसे लड़ले।।

ड़गमगाते हुये वसूलों को
ऊपरवालेके हवाले करले।
मंझिल बुलाती है
गर तू इसे चाहले।।

चलते रहो

पीछे मुड़के अब
हमे देखना नही।
पुराना आलाप अब
फिरसे छेड़ना नही।।

नई साँसे, नई धड़कन
नया रास्ता, मंझिल नई।
चलना अभी बहुत दूर
बुला रहा कहीसे कोई।।

चलते रहना काम मेरा
मतलब दिशाओसे नही।
जिंदगी थोड़ी और कटे
रूकना मेरा काम नही।।

गल्तीयो का हिसाब लगाकर
वक्त अब गवाना नही।
आगे पीछे, ऊपर नीचे
होता रहे, कोई गम नही।।

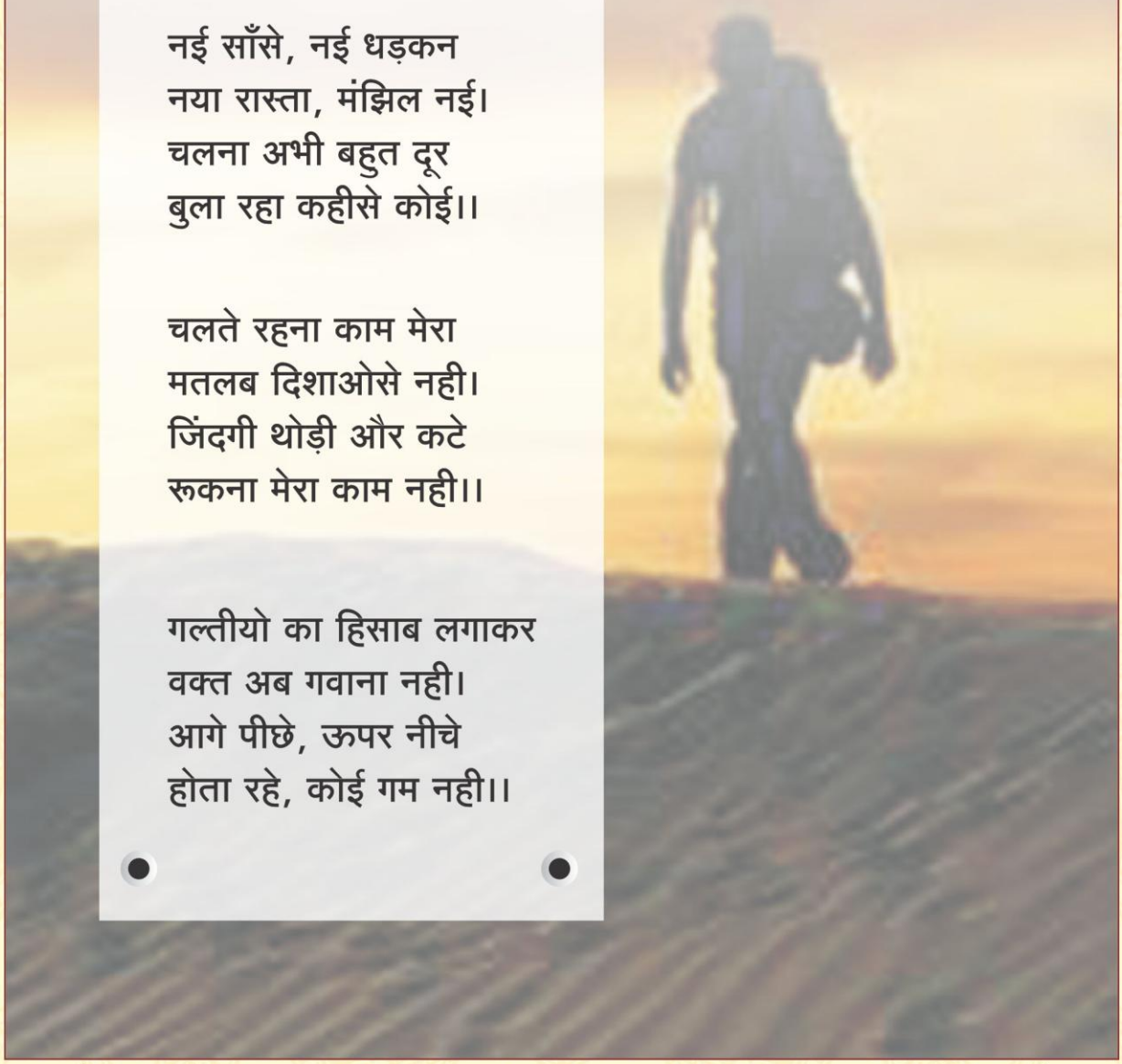

पैसे कमाने का मशीन

अब मै आदमी कहाँ
पैसे बनाने का मशीन।
पैसो से बेच देता हूँ
सपने देखे जो हसीन।।

साँसे चल रही नाप तोलके
भाव ताव मे उलझा हर क्षण।
औपचारिक संबंधोसे उकता जाता
अब जल्दीसे ये मेरा मन।।

चाहत यहाँ हरदम पानेकी
गिनता पैसोसे हरकोई जीवन।
कीमत यहाँ सिर्फ उसीकी
जिनकी हाथोमे पैसोकी खन खन।।

आनंद खोकर पैसा कमाना
अब नही कहलाता पागलपन।
कोई बिकता अपना सुख चैन
कोई बेचता अपना यौवन।।

बिकने लगे नर और नारी
पैसा रहा ना सिर्फ साधन।
साध्य को कबसे खरीद चुका
झटसे इसका हो जाये हर जन।।

मै गुमशुदा

अपने ही अस्तित्वको
ढूंढ़ता मै गुमशुदा।
मालूम नही कब
हुआ अपनेसे जुदा।।

मै अंदर दबा
ऊपर संबंधोकी परते।
नकाब बदलते रहता हूँ
जैसे संबंध वैसी बाते।।

जगना, सोना, खाना, पीना
अब मेरे बसमे कहा।
मुझे कब क्या करना है
अब बदलता ये जहाँ।।

खुद के लिये जीके
अब बरसो बीत गये।
गुनगुनाना, खिलखिलाना
कुछ गुफ्तंगू हो जाये।।

अब ढूंढ़ना चाहता हूँ
मै अपने अस्तित्वको।
चार पल अपने लिये
फिर कह दूंगा
अलविदा जीवनको।।

कल ऐसा आये

कल एक ऐसा आये
ना हो मुश्किलोकी बेड़िया।
अटके ना साँसे देखकर
मानवता खरीदती रोटिया।।

कल के ऊपर टिकी हुई
हमारी उम्मीदो की बोरीया।
ना भूले माँ बच्चो को
सो ते वक्त सुनाना लोरीया।।

कल के आशाओके किरणोसे
खुले थकानोकी हथकड़ियाँ।
कुसंस्कारोके अंधकारमे
ना चमके ड़रावनी बिजलियाँ।।

कल तक पहुँचने के लिये
लगे आज की सीढ़ीया।
कल के बाहोमे सोये हम
चलो देखे एक सपना बढ़िया।।

मंझिल के पास

मंझिल के सामने
चलना है कुछ कदम।
खत्म होने लगा अब
आत्मविश्वास का इंधन।।

बड़े उत्साह से चला था
संकटोसे लढ़ता पहुंचा पास।
पाने को इसको उतावला
अब बढ़ गई है आस।।

बढ़ गई धड़कने
बैठ गया है श्वाँस।
डूब ना जाऊं कही
कम होने लगा विश्वास।।

शक्ती भी उतावली
मुझसे विदा लेने।
नैनो के दो दिये
लगे है बुझने।।

क्यो मंझिल के पास
आकर आदमी धाड़स खोता।
चार कदम आखिर के
फिर जग उसका होता।।

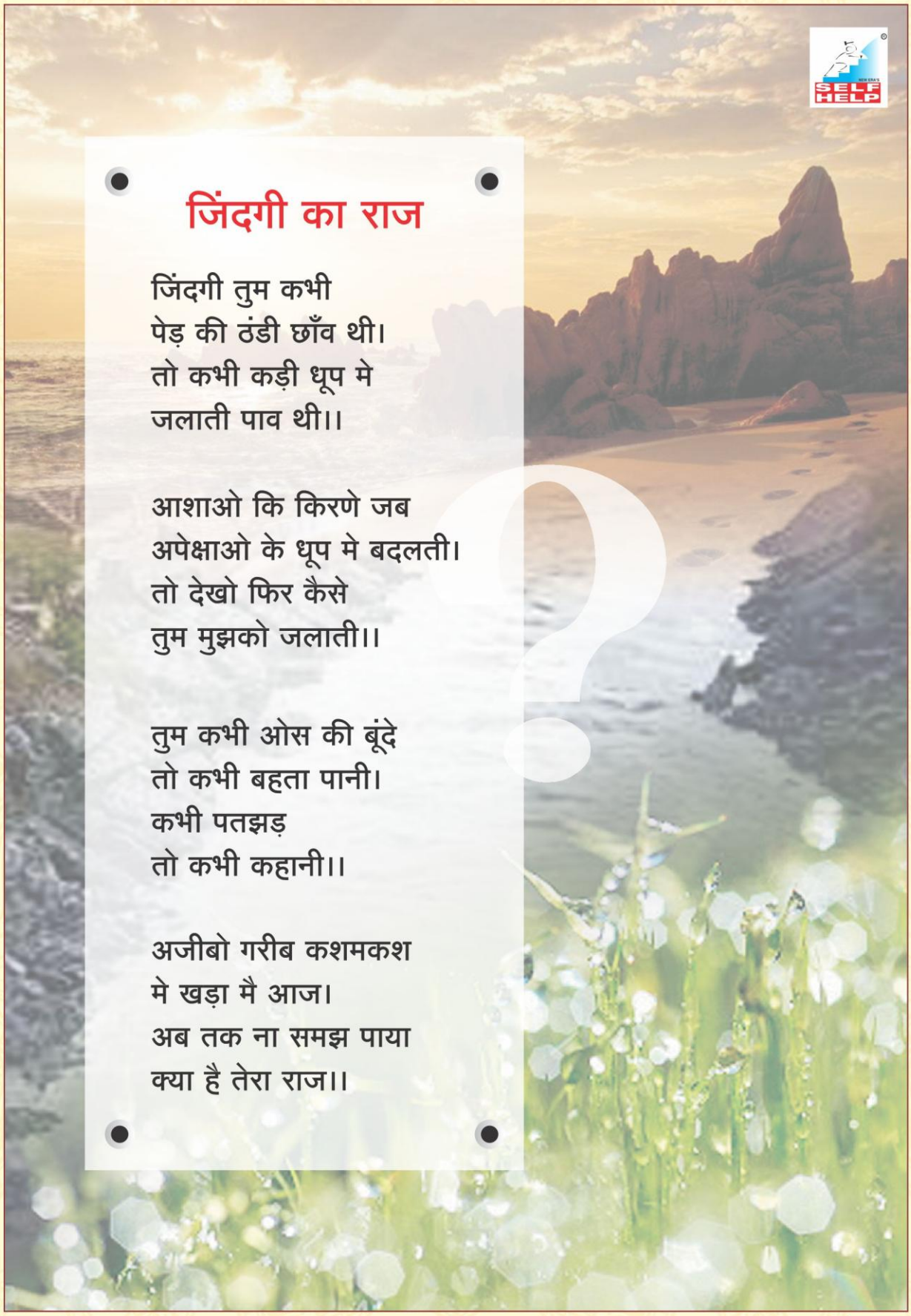

जिंदगी का राज

जिंदगी तुम कभी
पेड़ की ठंडी छाँव थी।
तो कभी कड़ी धूप मे
जलाती पाव थी।।

आशाओ कि किरणे जब
अपेक्षाओ के धूप मे बदलती।
तो देखो फिर कैसे
तुम मुझको जलाती।।

तुम कभी ओस की बूंदे
तो कभी बहता पानी।
कभी पतझड़
तो कभी कहानी।।

अजीबो गरीब कशमकश
मे खड़ा मै आज।
अब तक ना समझ पाया
क्या है तेरा राज।।

जिंदगी साथ निभाओ

जिंदगी कभी तुम
लगी मुझे परछाई।
तो कभी मझधार
मे मुझे छोड़ आई।।

कभी तो कितनी
मस्ती आई।
तो कभी
गहरी तन्हाई।।

कभी लगी तुम
बहुत हरजाई।
तो कभी की
दूर तुमने रुसवाई।।

कभी तुम इतराई
तो कभी इठलाई।
बलखाई तो
कभी मुरझाई।।।

कभी झट से।
बाहोमे चली आई
तो कभी
बेवजह शरमाई।।

कभी पहेली
बनकर आई।
तो कभी लगी
कहानी सुनी सुनाई।।

कभी सुबह की
लालिमा लाई।
तो कभी रात
की कालिमा लाई।

लगा कभी झूमकर
बहार आई।
तो कभी बेवजह
पतझड़ लाई।।

जिंदगी तुम ही कहो
मै तुमपर एतबार करु
या ना करु।
कुछ कहूँ
या ना कहूँ।
तुझसे दिल्लगी करु
या दूर रहूँ।।

अजीबो गरीब
कशमकश
कुछ भी तो नही मेरे वश

चाहिये मुझे तुम
जैसे ठंड़ी छाँव।
बीच मझधार मे
टिकी हुई नाव।
मंझिल के और
सुनहरे सपनोका
लुभाता हुआ गाँव।।

तुम्हे मालूम है
मै ना छोड़ पाऊँगा।
कुछ देर रुठकर
फिर वापस आऊँगा।
तुमसे मै मजबूर
मुझसे तुम मरहूम।।

आओ तुम साथ निभाओ
मुझे अपनेमे पाओ।
मै कुछ कदम चलू
तुम्हे अपने दिलमे धरु।
जुदा होनेसे पहले
हम साथ रहले।
कुछ आपसमे कहले
कुछ आपसकी सुनले।
एक दूसरोको चुनले
जिये हम सही
ये दुनियाँ जानले।।

आ अब लौट चले

आ अब लौट चले
जिम्मेंदारियोंको अपने फिरसे मिलने।।धृ।।

आये थे हम यहाँ ईंधन भरने
आसमान ये थोड़ा ऊँचा करने।
आज हम हँसे बहुत
नाकामीयाबीपे अपने।।

धो ड़ाले हमने वो सपने
जो हो ना सके अपने।
बाहे फैलाये मंझिल दूर खड़ी
लगी है अब फिरसे बुलाने।।

नये ख्वाब की दुनियाँ
अब लगे है हम बुनने।
उम्मीदोंकी अनेक चिन्गारियां
लगी है फिरसे सुलगने।।

आओ इकठ्ठा करले
धमनियोंमे प्राण अपने।
हमपे निर्भर है दुनियाँ
कौन देगा इन्हे दाना चुगने।।

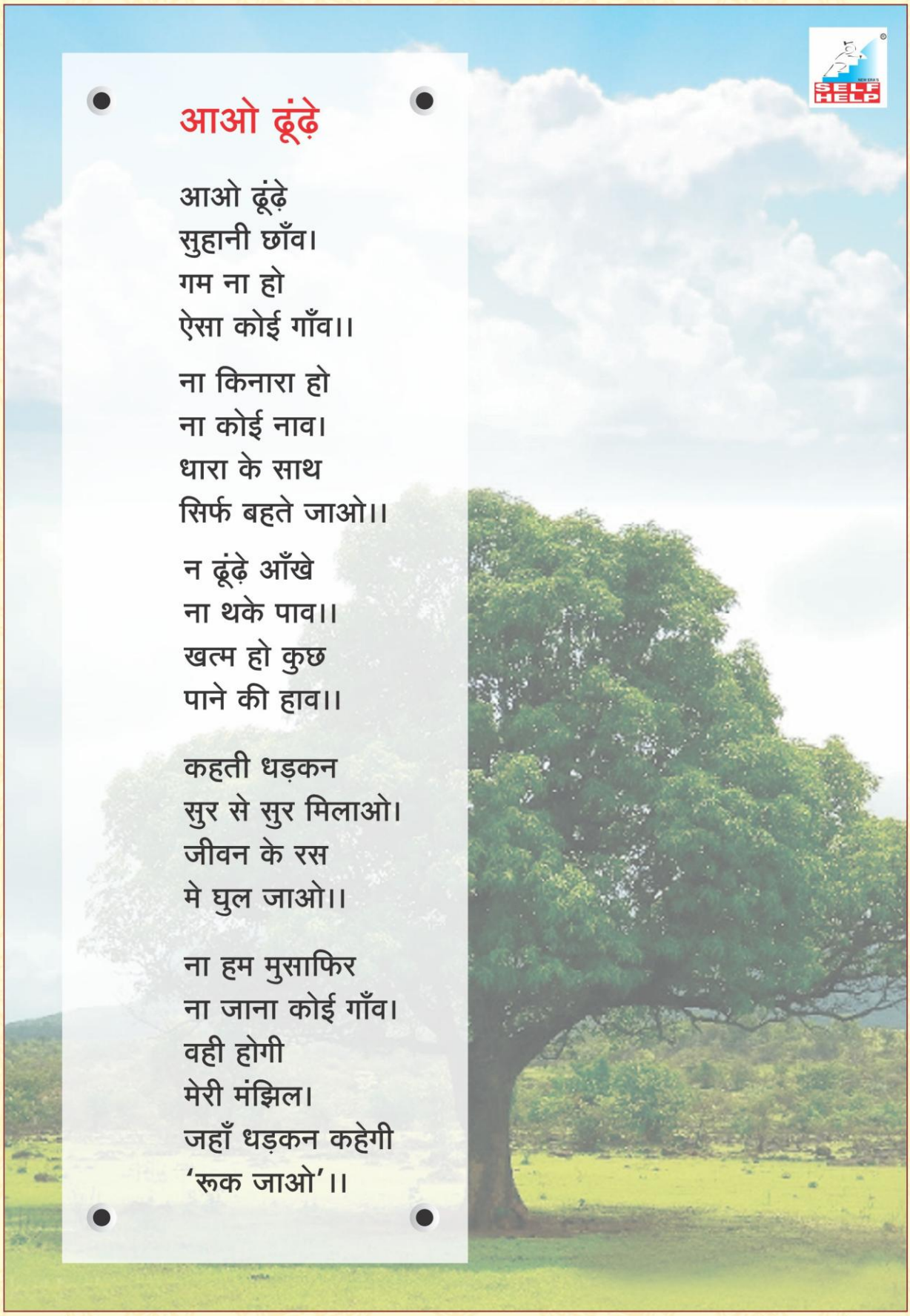

आओ ढूंढ़े

आओ ढूंढ़े
सुहानी छाँव।
गम ना हो
ऐसा कोई गाँव।।

ना किनारा हो
ना कोई नाव।
धारा के साथ
सिर्फ बहते जाओ।।

न ढूंढ़े आँखे
ना थके पाव।।
खत्म हो कुछ
पाने की हाव।।

कहती धड़कन
सुर से सुर मिलाओ।
जीवन के रस
मे घुल जाओ।।

ना हम मुसाफिर
ना जाना कोई गाँव।
वही होगी
मेरी मंझिल।
जहाँ धड़कन कहेगी
'रूक जाओ'।।

अनमोल

रोज सुबह चले जाता
मंदिर मस्जिद कोई मैखाना।
भवसागर मे तैरता कोई
चाहे कोई बह जाना।।

क्षण भर की जान पहचान
फिर हो जाओगे बेगाना।
क्षणभंगुर इस दुनियाँका
यही है ताना बाना।।

रात दिन के चाह मे
जगना फिर है सो जाना।
भौतिकता के इस युग मे
आसान बहुत है भटक जाना।।

आनंद पथ का तू पथिक
दुख ना तू पा जाना।
बड़ी अनमोल है जिंदगी
व्यर्थ मे ना खो देना।।

सोच कभी भी आ सकता है
उस जहाँका तुझे बुलाना।
अच्छे कर्मो को साथ रख
आसान होगा दुनियाँ छोड़ जाना।।

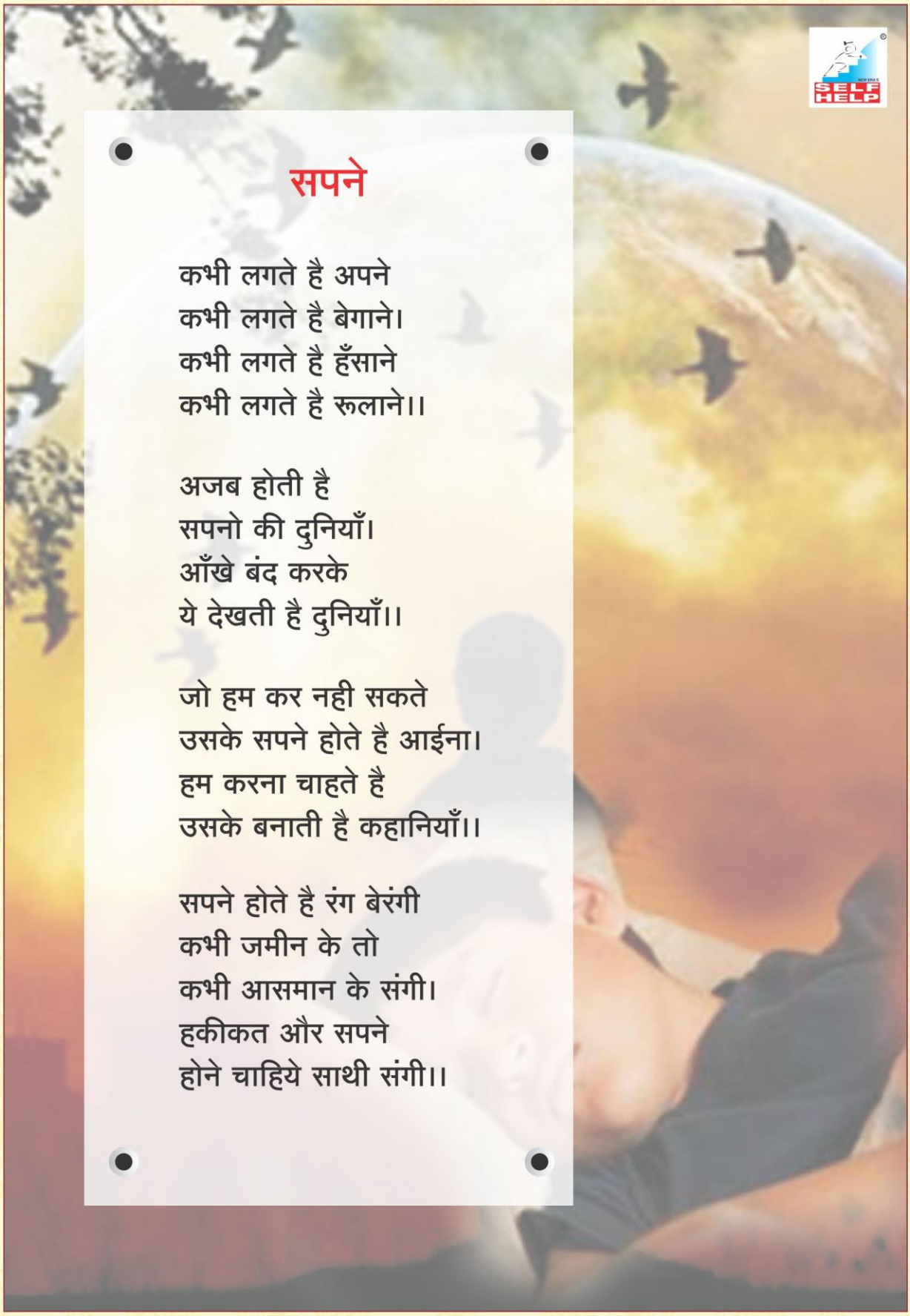

सपने

कभी लगते है अपने
कभी लगते है बेगाने।
कभी लगते है हँसाने
कभी लगते है रूलाने।।

अजब होती है
सपनो की दुनियाँ।
आँखे बंद करके
ये देखती है दुनियाँ।।

जो हम कर नही सकते
उसके सपने होते है आईना।
हम करना चाहते है
उसके बनाती है कहानियाँ।।

सपने होते है रंग बेरंगी
कभी जमीन के तो
कभी आसमान के संगी।
हकीकत और सपने
होने चाहिये साथी संगी।।

बारिश

रिम झिम, रिम झिम
गिरती बारिश।
नवचैतन्य जीवन मे
जगाती बारिश।।

कभी साजन की याद
दिलाती बारिश।
कभी बचपन मे
ले जाती बारिश।।

जगाती अनेक
आशाओंके बीज।
तो कभी बिरहा मे
जलाती बारिश।।

कईयोंकी प्यास
बुझाती बारिश।
तो बुढ़ापेको जवान
बनाती बारिश।।

कोई खेलता कूदता
तो काई नाचता गाता।
उमंगो के ऊँचाईयोंपर
ले जाती बारिश।।

जीवन की हर थकान
मिटाती है बारिश।
दिमाग से दिल पर
ले आती है बारिश।।

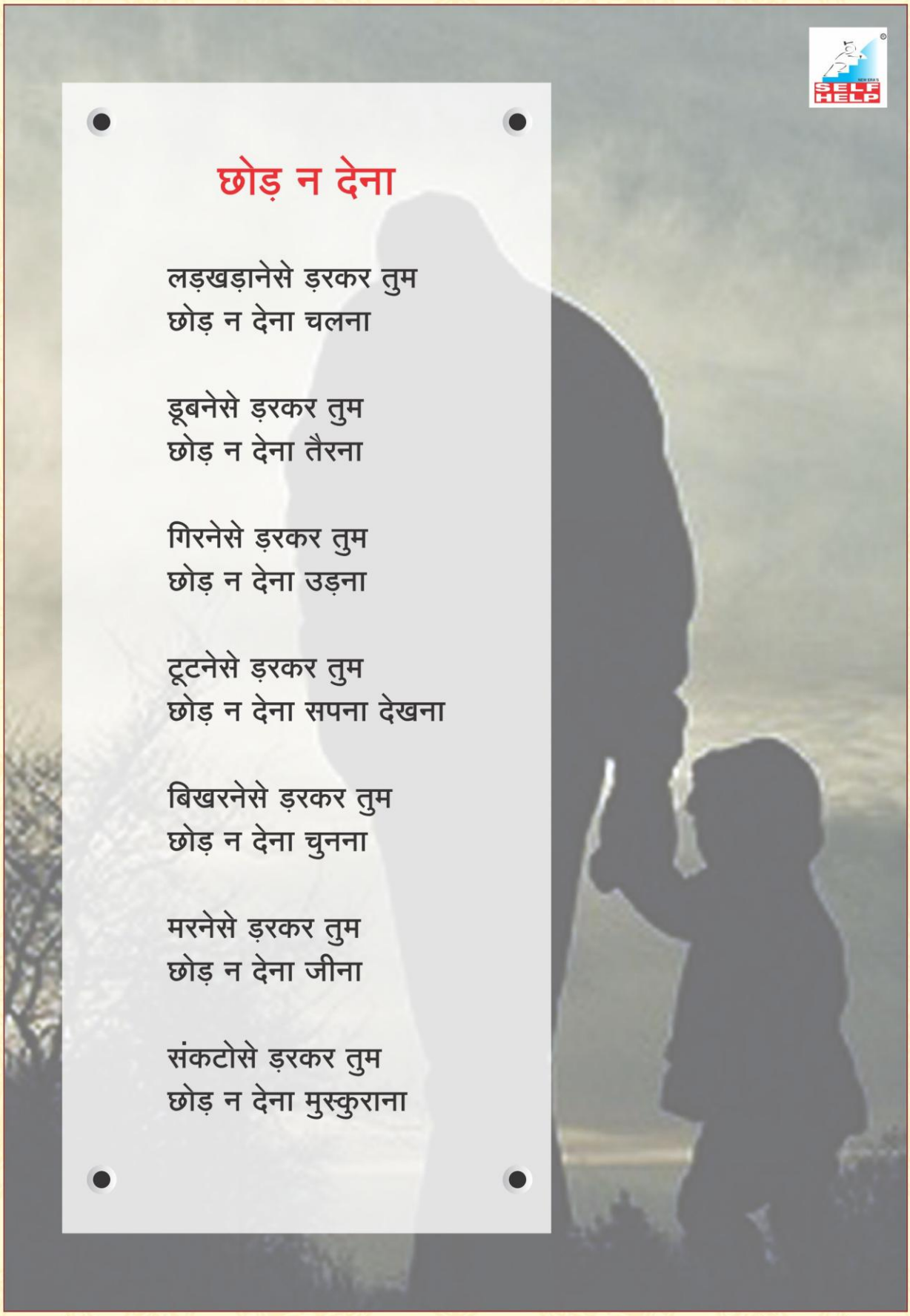

छोड़ न देना

लड़खड़ानेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना चलना

डूबनेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना तैरना

गिरनेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना उड़ना

टूटनेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना सपना देखना

बिखरनेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना चुनना

मरनेसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना जीना

संकटोसे ड़रकर तुम
छोड़ न देना मुस्कुराना

भावनाओ का कारोबार

ऐसा रहे मेरे
भावनाओ का कारोबार।
समतोल बनाये जीवनमे
परमार्थ और व्यवहार।।

कामुक भावनाओ का
तूफान न आये कभी।
क्रोध के भावनाओ का
बांध न फूटे कभी।।

सात्विक और सुंदर
विचार हो सभी।
उसके प्रती आभार हो
मौत आये जबभी।।

भावनाओ की लगाम
हो हाथोमें।
हृदयमे ही रहे,
यह न पहुंचे माथे मे।।

गलत भावनाओ का
व्यवहार कम हो खातो में।
मानव सुलभ भावनाये
टपके बातोमें।।

ये न रहे वादो में
न रहे यह दंगा फसादो में।
आनी चाहिये यह जैसे
गर्मी की जरूरत पड़ती है जाड़ो में।।

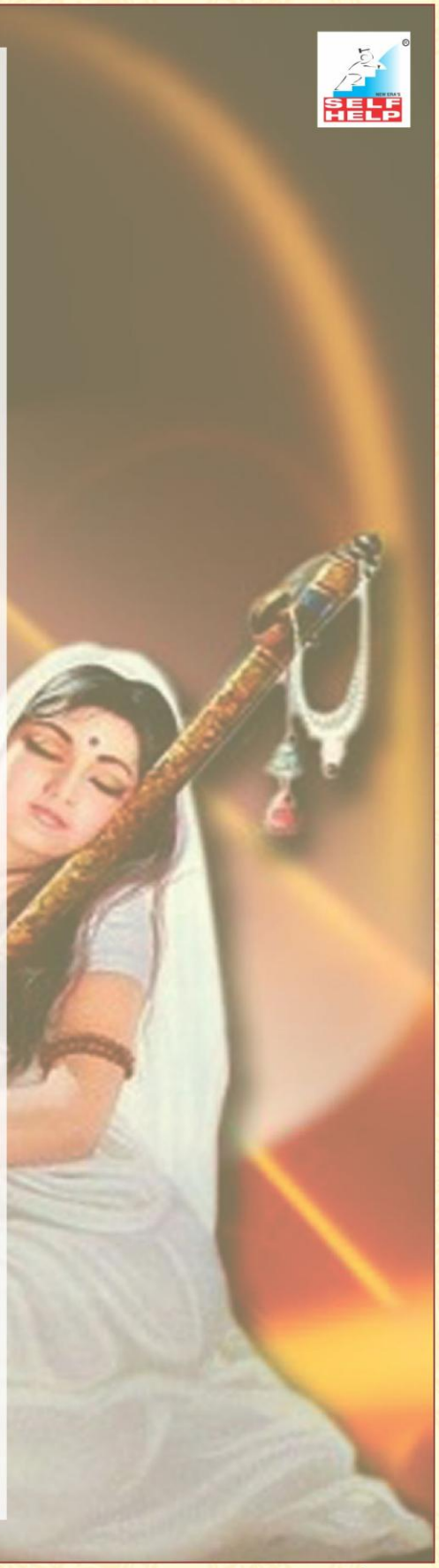

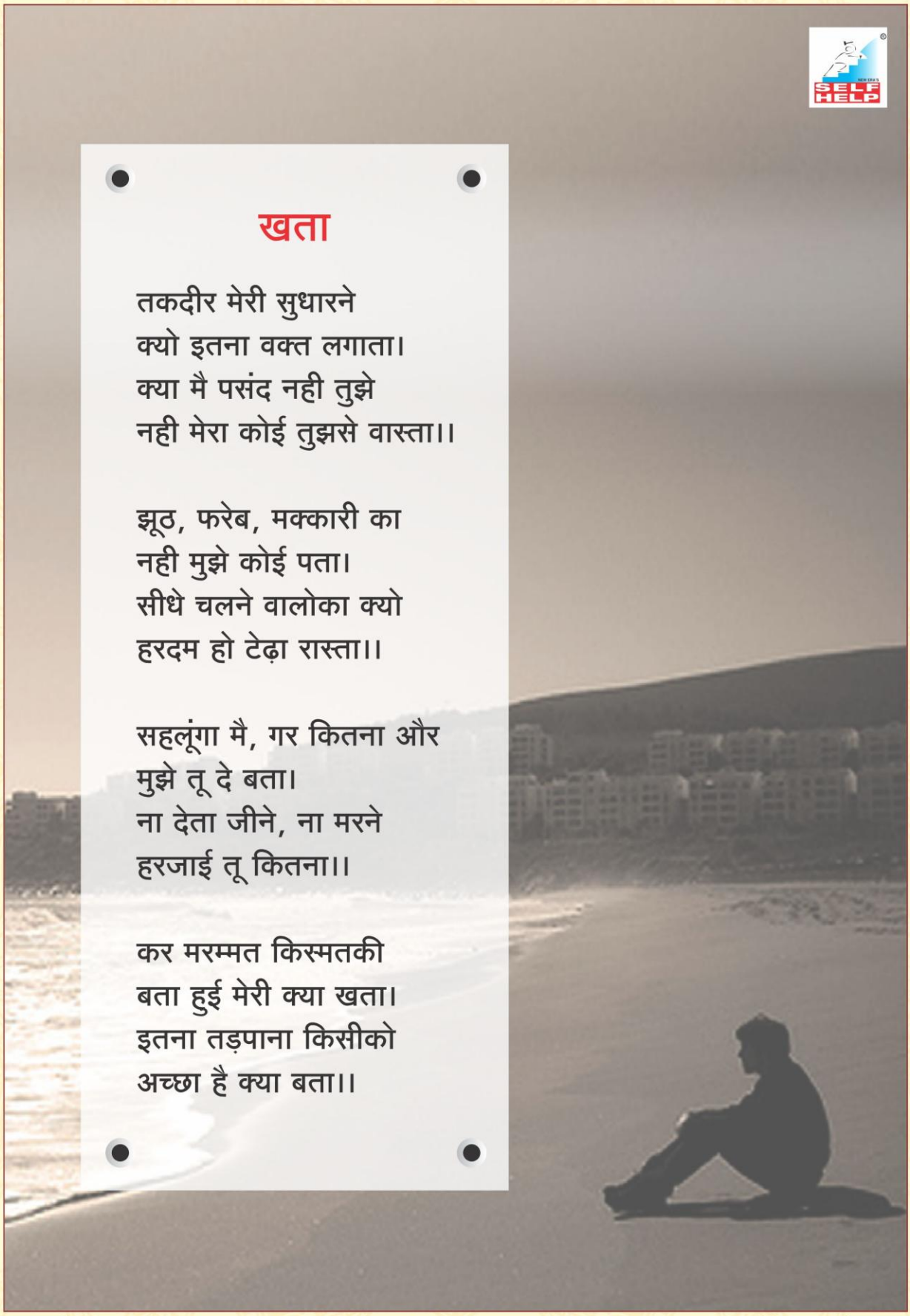

खता

तकदीर मेरी सुधारने
क्यो इतना वक्त लगाता।
क्या मै पसंद नही तुझे
नही मेरा कोई तुझसे वास्ता।।

झूठ, फरेब, मक्कारी का
नही मुझे कोई पता।
सीधे चलने वालोका क्यो
हरदम हो टेढ़ा रास्ता।।

सहलूंगा मै, गर कितना और
मुझे तू दे बता।
ना देता जीने, ना मरने
हरजाई तू कितना।।

कर मरम्मत किस्मतकी
बता हुई मेरी क्या खता।
इतना तड़पाना किसीको
अच्छा है क्या बता।।

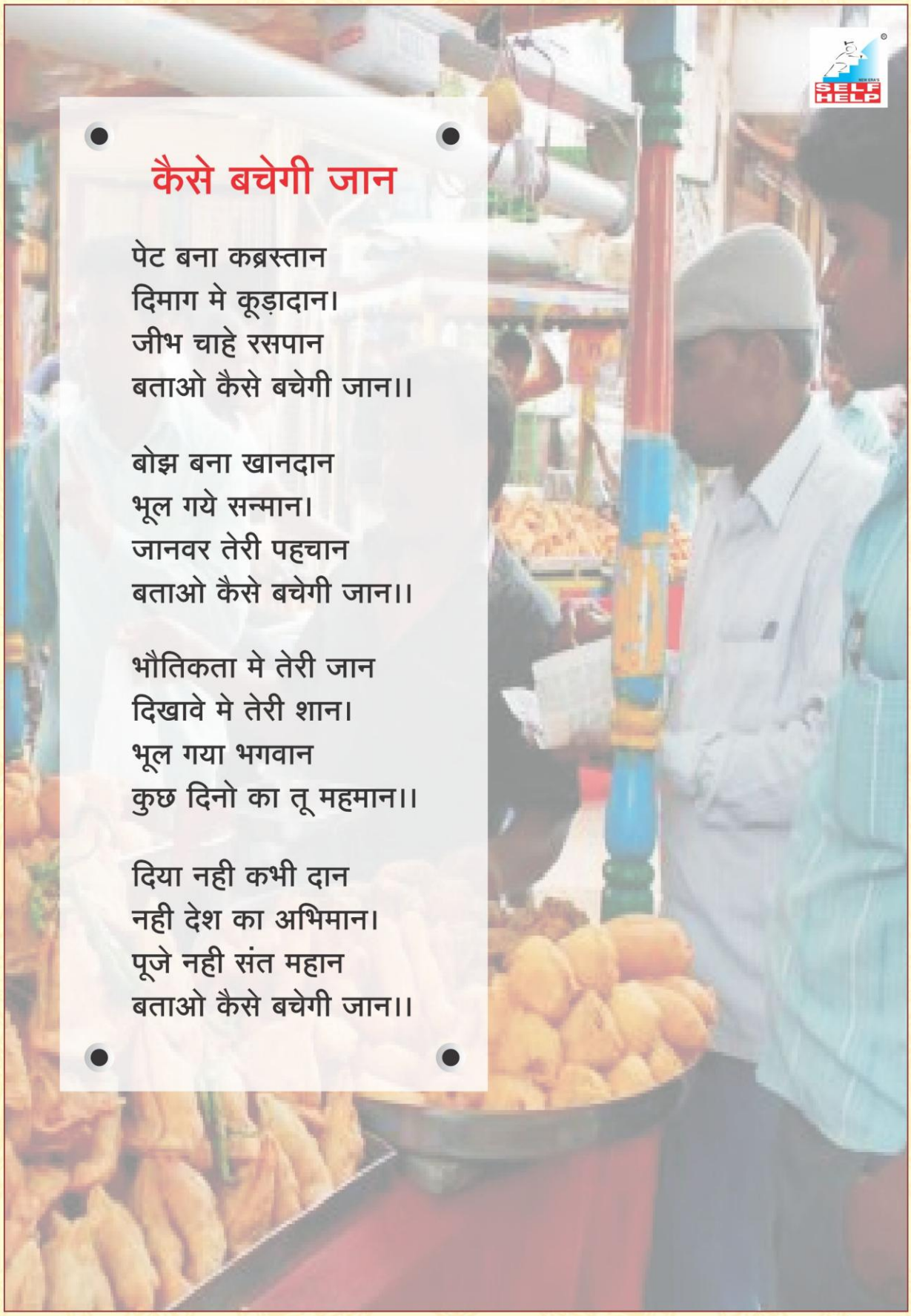

कैसे बचेगी जान

पेट बना कब्रस्तान
दिमाग मे कूड़ादान।
जीभ चाहे रसपान
बताओ कैसे बचेगी जान।।

बोझ बना खानदान
भूल गये सन्मान।
जानवर तेरी पहचान
बताओ कैसे बचेगी जान।।

भौतिकता मे तेरी जान
दिखावे मे तेरी शान।
भूल गया भगवान
कुछ दिनो का तू महमान।।

दिया नही कभी दान
नही देश का अभिमान।
पूजे नही संत महान
बताओ कैसे बचेगी जान।।

चाहिये

चाहिये....
सिंह की हुंकार
भगतसिंग की ललकार।
शिवबा की तलवार
स्वाभिमान का व्यवहार।।

चाहिये....
बापू की गुहार
मदर टेरेसा का प्यार।
साधु संत और सदाचार
माँ भारती का उपकार।।

चाहिये....
अश्व की शक्ती
मीरा की भक्ती।
खुशियों भरा व्यक्ति
कर्म से आसक्ती।।

भगवान पाने यह सब
दे दो हमे शक्ती अपार।
माँ बाप के संग
मानेंगे तुम्हारे उपकार।।

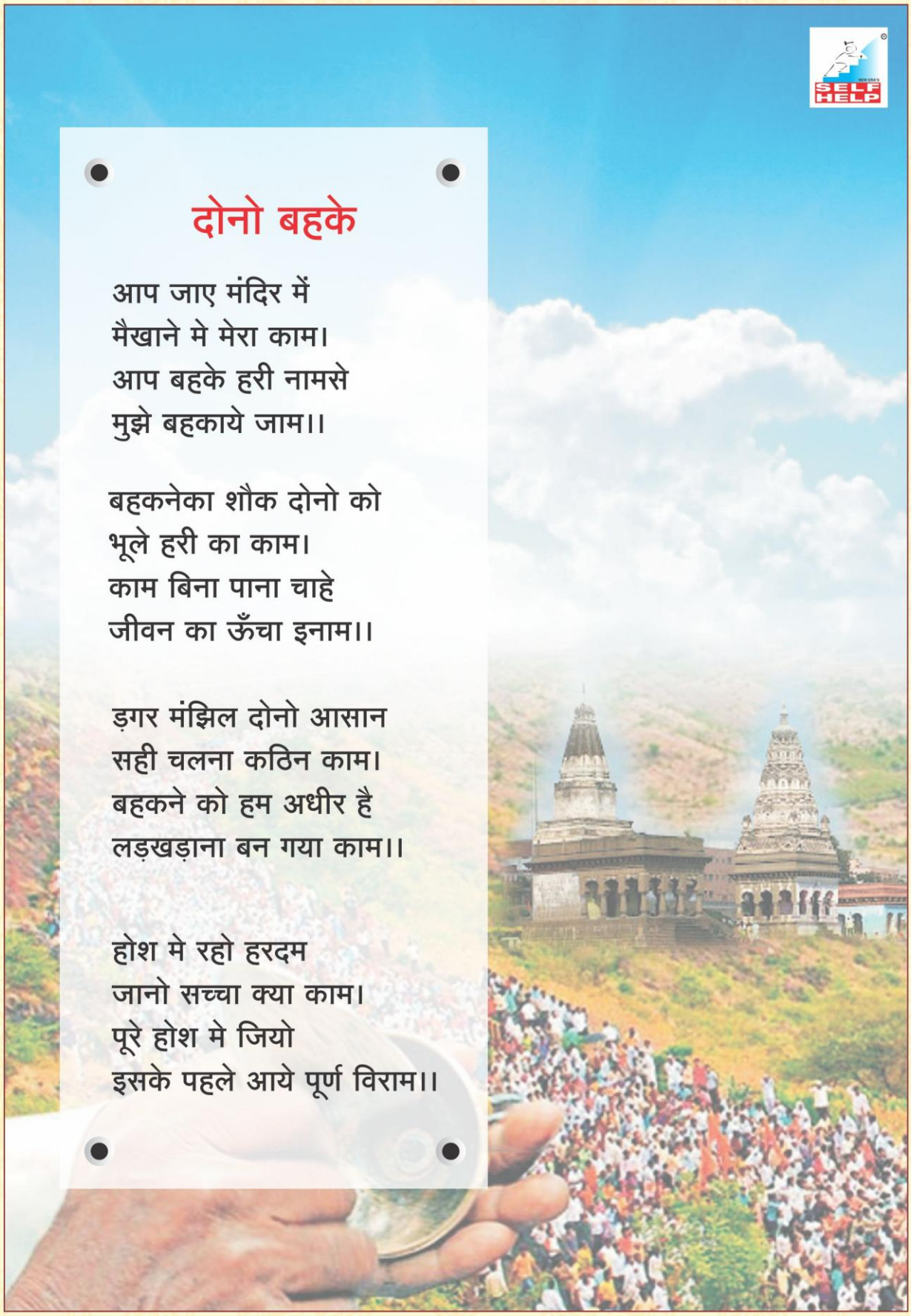

दोनो बहके

आप जाए मंदिर में
मैखाने मे मेरा काम।
आप बहके हरी नामसे
मुझे बहकाये जाम।।

बहकनेका शौक दोनो को
भूले हरी का काम।
काम बिना पाना चाहे
जीवन का ऊँचा इनाम।।

ड़गर मंझिल दोनो आसान
सही चलना कठिन काम।
बहकने को हम अधीर है
लड़खड़ाना बन गया काम।।

होश मे रहो हरदम
जानो सच्चा क्या काम।
पूरे होश मे जियो
इसके पहले आये पूर्ण विराम।।

अवहेलना

कितना मुश्किल है
इस अवहेलना को झेलना।
ले आती साथ ये
हीन भावना की सेना।।

कई जीतने वालोको
हरा देती है अवहेलना।
कईयोंको सिखा देती यह
सर्वस्व को दाव पे लगाना।।

अवहेलना के कारण ही
तपस्या कर ध्रुव तारा बना।
इसी के कारण ही
रावन को पडी जान गंवाना।।

कोई नही बचा इससे
करने वालोको भी पड़ा पछताना।
इसी के कारण ही तो
द्रोपदी को पड़ा था वस्त्र उतारना।।

बुरी बला है यह यारो
करो मत तुम किसीकी अवहेलना।
यह करनेसे देखो
दुश्मन होता है जमाना।।

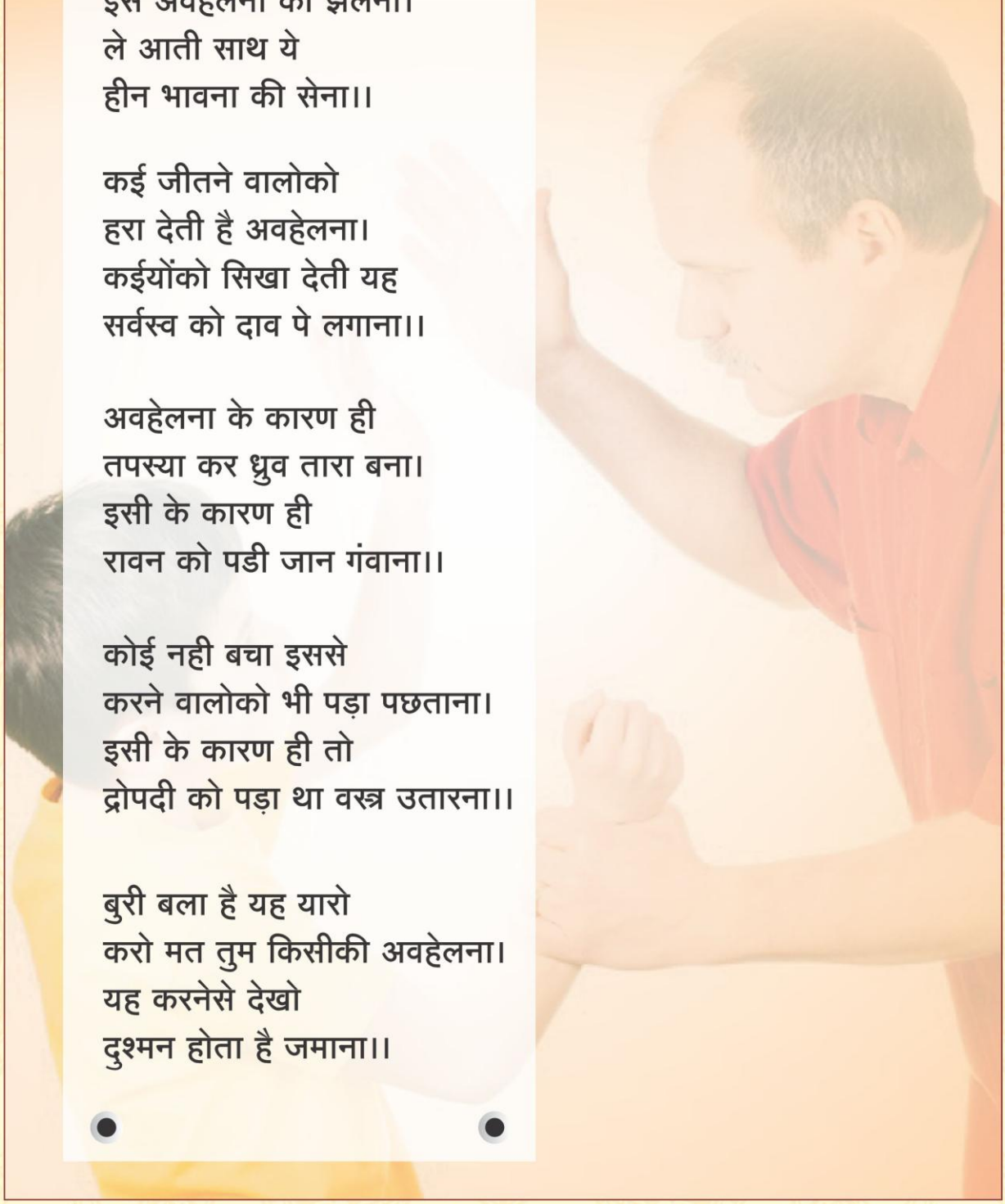

आलोचना

मन का मैल
है आलोचना।
है व्यक्तिमत्व को
नीचा ठहराना।।

करने वालेके मनमे
होती है हीन भावना।
है यह नकारात्मक
शब्दो का जाल बुनना।।

शराब से ज्यादा
बुरी है आलोचना।
मन हरदम चाहता
इसमे फसे रहना।।

निश्चित है इसका
शरीर पर बुरा असर ड़ालना।
पड़ेगा मन और
शरीर से हाथ धोना।।

आलोचना है व्यक्तिमत्व
का बुरा कोना।
शुध्द भावोसे मनको
होगा चमकाना।।

यह अपनो को
कर देती बेगाना।
बड़ा मुश्किल है
इसके लत से बचना।।

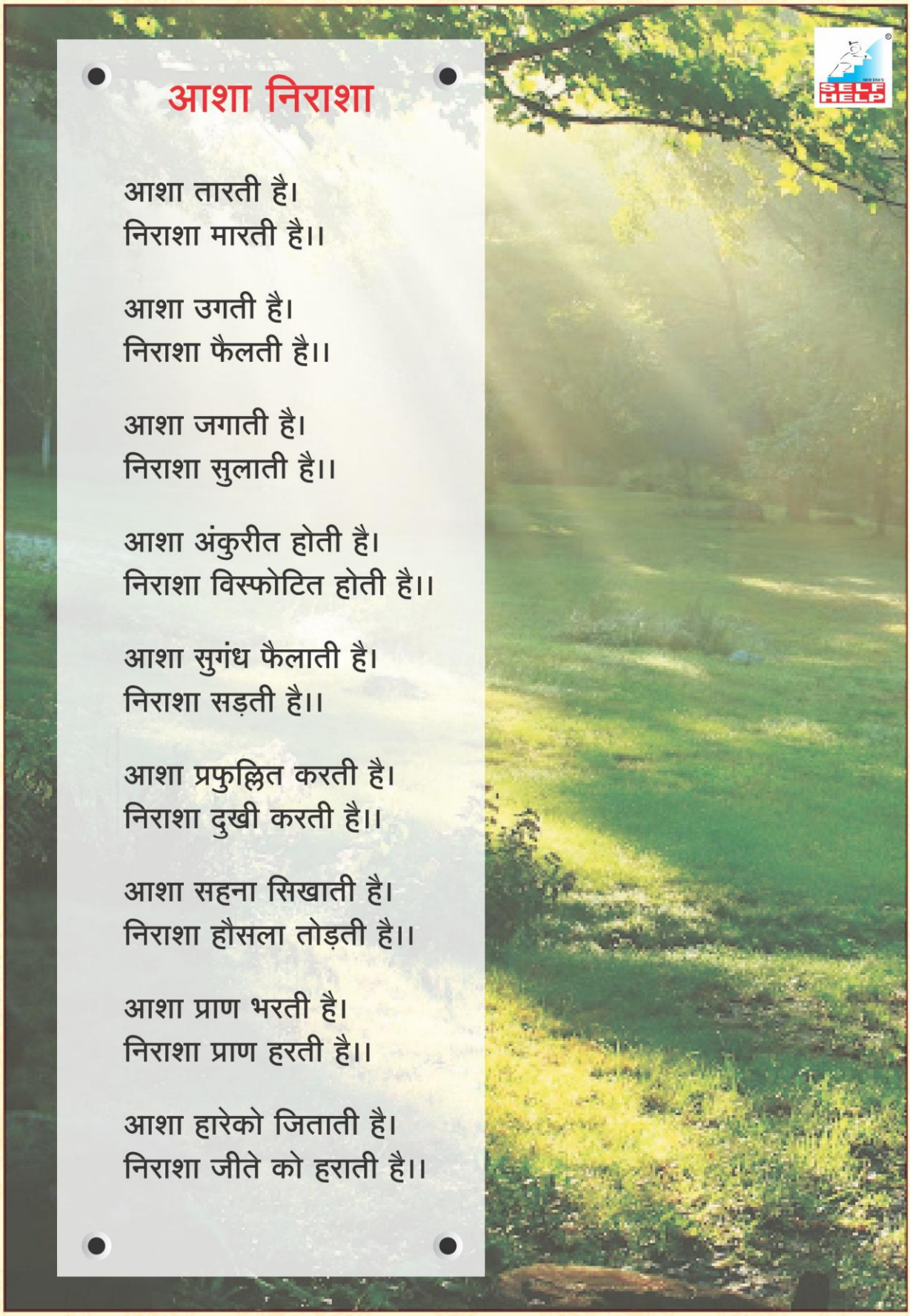

आशा निराशा

आशा तारती है।
निराशा मारती है।।

आशा उगती है।
निराशा फैलती है।।

आशा जगाती है।
निराशा सुलाती है।।

आशा अंकुरीत होती है।
निराशा विस्फोटित होती है।।

आशा सुगंध फैलाती है।
निराशा सड़ती है।।

आशा प्रफुल्लित करती है।
निराशा दुखी करती है।।

आशा सहना सिखाती है।
निराशा हौसला तोड़ती है।।

आशा प्राण भरती है।
निराशा प्राण हरती है।।

आशा हारेको जिताती है।
निराशा जीते को हराती है।।

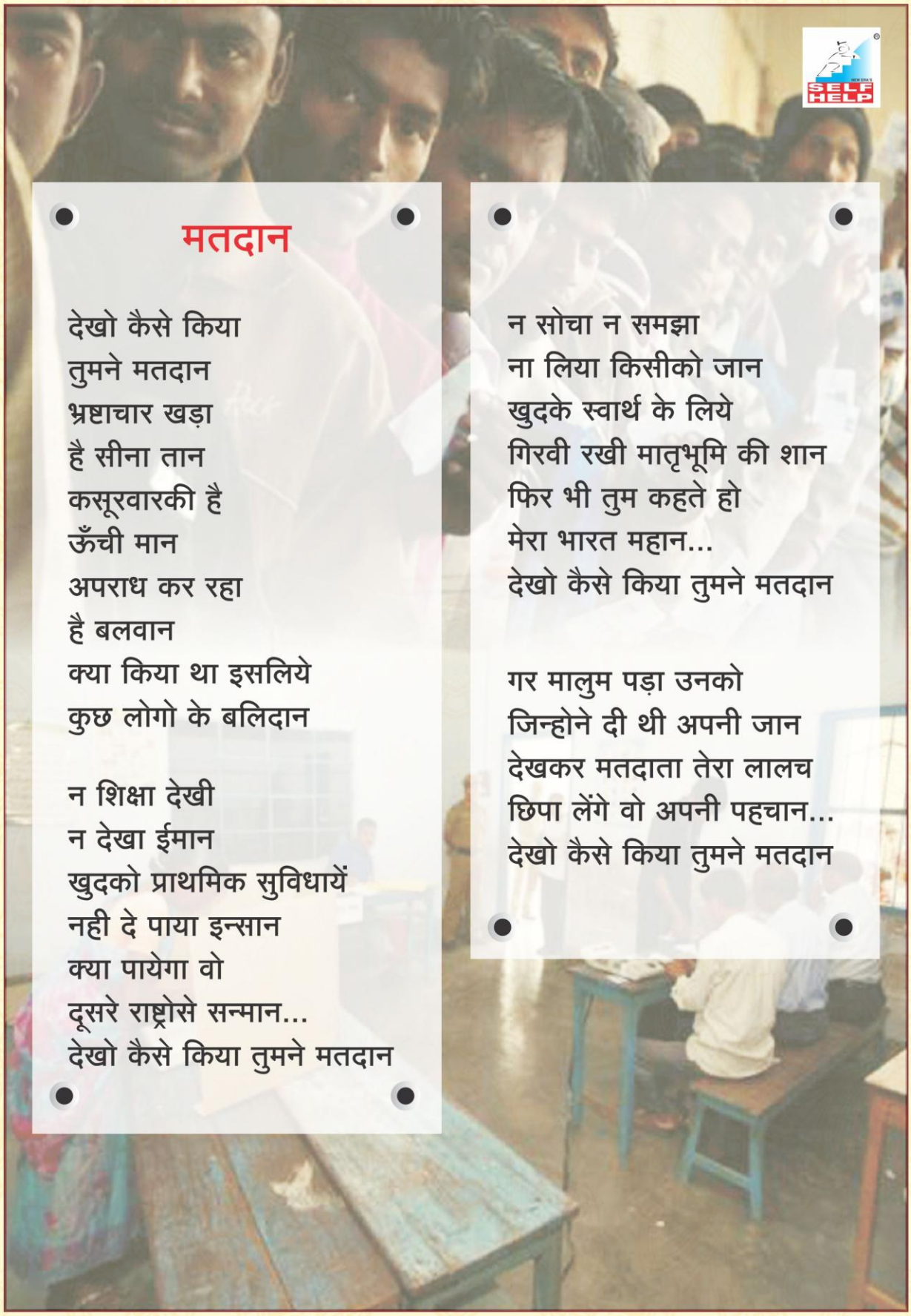

मतदान

देखो कैसे किया
तुमने मतदान
भ्रष्टाचार खड़ा
है सीना तान
कसूरवारकी है
ऊँची मान
अपराध कर रहा
है बलवान
क्या किया था इसलिये
कुछ लोगो के बलिदान

न शिक्षा देखी
न देखा ईमान
खुदको प्राथमिक सुविधायें
नही दे पाया इन्सान
क्या पायेगा वो
दूसरे राष्ट्रोसे सन्मान...
देखो कैसे किया तुमने मतदान

न सोचा न समझा
ना लिया किसीको जान
खुदके स्वार्थ के लिये
गिरवी रखी मातृभूमि की शान
फिर भी तुम कहते हो
मेरा भारत महान...
देखो कैसे किया तुमने मतदान

गर मालुम पड़ा उनको
जिन्होने दी थी अपनी जान
देखकर मतदाता तेरा लालच
छिपा लेंगे वो अपनी पहचान...
देखो कैसे किया तुमने मतदान

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे है ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर है ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते है ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते है ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते है ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते है ।
धन्यवाद !
आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

विशेष आभार :

मेरी धर्मपत्नी सौ. संगीता जैन, एम.ए.(इको.) इनके
जिन्होंने मेरे सभी हिंदी भाषिक किताबो का शुद्धलेखन किया।

मेरा परिचय

धुवाँ बन उड़ जाऊँगा
राख बन बिखर जाऊँगा,
कुछ देर दिलोमें रहकर तुम्हारे
मै इस जहाँसे गुजर जाऊँगा ।

विषमताओ को क्षमताओसे जीतनेका
राज मै लिख जाऊँगा,
जब जब आयेगा पतझड़
मै बहारोंकी याद दिलाऊँगा।

नश्वर काया पर क्या इतराऊँ
क्षण मे आँखो से ओझल हो जाऊँगा,
जो दिया है इस जहाँने
उसे सूत समेत लौटाऊँगा।

औकात, हिम्मत, ताकत, दौलत
ना कोई यहाँ अमर बनायेगा,
सदभावना, सदगुण, संवेदना, सर्मपण
बस इनसेही काम चलाऊँगा।

नही कोई पता और परिचय मेरा
बस एक अच्छा आदमी कहलाऊँगा,
जब भी आयेगा बुलावा उसका
गोदी मे उसके छुपके सो जाऊँगा।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

कीमत □: १००/-